ALL NEW

clickastro

SERVED OVER 107 MILLION SMILES
SINCE 1984

IN-DEPTH HOROSCOPE

PREMIUM REPORT

श्री गणेशाय नमः

Horoscope of Rahul Kumar

जननी जन्म सौख्यानाँ
वर्धनी कुल सँपदाँ
पदवी पूर्व पुण्यानाँ
लिख्यते जन्म पत्रिका

माता और संतान की भलाई के लिए
परिवार की संतोष वृद्वि के लिए
प्राचीन धार्मिक प्रक्रिया की अनुगम के लिए
यह जन्मकुण्डली लिखा गया है

clickastro.com
Make your future click

नाम	: Rahul Kumar
लिंग	: पुरुष
जन्म तिथि	: 1 जानुवरी, 1989 रविवार
जन्म समय (Hr.Min.Sec)	: 00:05:00 AM Standard Time
समय मेखल (Hrs.Mins)	: 05:30 ग्रीनवीच रेखा के पूर्व
जन्म स्थल	: Delhi
रेखांश &अक्षांश (Deg.Mins)	: 77.12 पूरब, 28.36 उत्तर दिशा
अयनांश	: चित्रपक्ष = 23 डिग्रि. 42 मिनिट. 19 सेकेन्ड.
जन्म नक्षत्र - नक्षत्र पद	: हस्त - 4
जन्म राशी - राशी का देव	: कन्या - बुध
लग्न - लग्न का देव	: कन्या - बुध
तिथि	: नवमि, कृष्णपक्ष

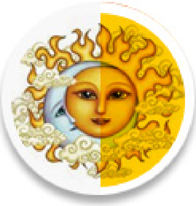

सूर्योदय	: 07:14 AM Standard Time
सूर्योस्त	: 05:35 PM
दिनामान (Hrs. Mins)	: 10.21
दिनामान (Nazhika.Vinazhika)	: 25.52
प्रादेशिक समय	: Standard Time - 21 Min.
ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जन्म तिथि	: शनिवार
कलिदिना	: 1859061
दशा पद्धति	: विमशोत्तरी पद्धति, साल = 365.25 दिन

नक्षत्र का देव	: चन्द्र
गणम्, योनी, जानवर	: देव, स्त्री, भैंस
पक्षी, पेड	: कौआ, आंवडे का पेड़
चन्द्र अवस्था	: 12 / 12
चन्द्र वेला	: 35 / 36
चन्द्र क्रिया	: 58 / 60
ठगड़ा राशी	: सिंह,वृशचिक
करण	: ग्रघभ
नित्ययोग	: अतीगन्धा
सूर्य का राशी - नक्षत्र का स्थान	: धनु - पूर्वषाढा
अनगदित्य का स्था	: पैर
[Zodiac sign (Western System)	: Capricorn

योगी पोयन्ट् - योगी नक्षत्र	: 162:44:0 - हस्त
योगी गृह	: चन्द्र
द्वगुणति योगी	: बुध
अवयोगी नक्षत्र - गृह	: ज्येष्ठ - बुध
आत्म करक - करकांसा	: मंगल - कुंम्भ
अमत्य करक (मन / ज्ञानशक्ति)	: शुक्र
लग्न अरुढ़ा (पाठा) तनु	: वृषभ
धन अरुढ़ा	: धनु

गृहों का रेखांश

गृहों का रेखांश पश्चमी पद्धती के प्रकार दिया गया है। जिसमें युरानस, नेपट्यून और प्लूटो भी शामील किया गया है।

पाश्चात्य पद्धति के अनुसार राशिचक्र में आप का राशी - मकर

गृह	रेखांश डि : मि :से	गृह	रेखांश डि : मि :से
लग्न	185:35:52	गुरु	56:44:31 रितु
चन्द्र	196:29:28	शनि	275:34:0
बुध	297:1:2	नेप्टयून	279:54:47
शुक्र	257:30:44	प्लूटो	224:33:1
मंगल	20:5:19	नोड	337:48:0

गृहों का निरायन रेखांश भारतीय ज्योतिष शास्त्र के आधार पर किया गया है। यह ऊपर बताई गई 'शयन मूल्यों' के आधार पर की गई है।

गृहों का निरायन रेखांश

गृहों के निरायन रेखांश पर भारत के ज्यातिष शास्त्र की नीव डाली गई है। यह शयन रेखांश के मूल्य से (गुणांक से) अयनांश मूल्य को कम करने से प्राप्त होता है।

अयनांश की गणना अलग - अलग पद्धती से की जाती है। उनके प्रकार और आधार नीचे बताये गये है: चित्रपक्ष = 23डिग्रि.42 मिनिट.19 सेकेन्ड.

गृह	रेखांश डि : मि :से	राशी	राशी के रेखांश प्रकार डि : मि :से	नक्षत्र	पद
लग्न	161:53:33	कन्या	11:53:33	हस्त	1
चन्द्र	172:47:9	कन्या	22:47:9	हस्त	4
रवि	256:36:51	धनु	16:36:51	पूर्वषाढा	1
बुध	273:18:43	मकर	3:18:43	उत्तरषाढा	2
शुक्र	233:48:25	वृशचिक	23:48:25	ज्येष्ठ	3
मंगल	356:23:0	मीन	26:23:0	रेवत्ति	3
गुरु	33:2:12	वृषभ	3:2:12 रितु	कृत्तिका	2
शनि	251:51:41	धनु	11:51:41	मूल	4
राहु	314:5:41	कुंम्भ	14:5:41	शताभिषा	3
केतु	134:5:41	सिंह	14:5:41	पूर्व फालगुनी	1
गुलिक	160:10:54	कन्या	10:10:54	हस्त	1

राशी

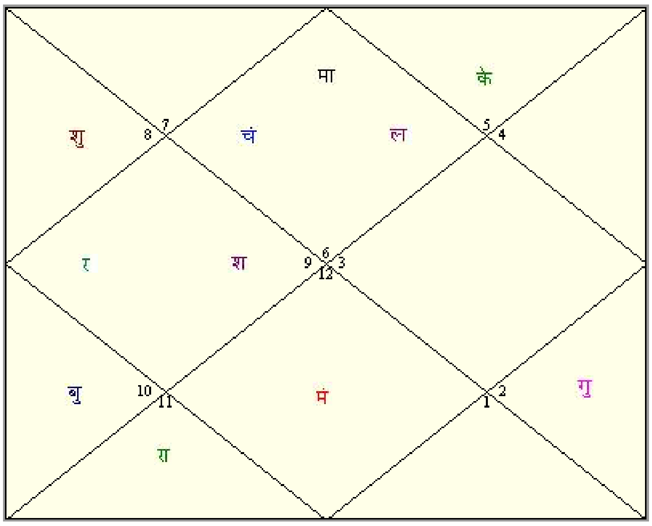

जन्म के समय दशा की समतुलना = **चन्द्र 0 साल, 4 महीने, 28 दिन**

नवांश

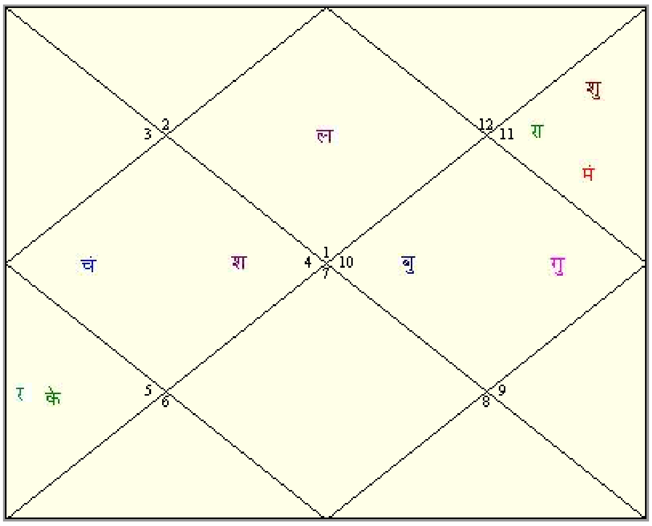

भाव कुंडली

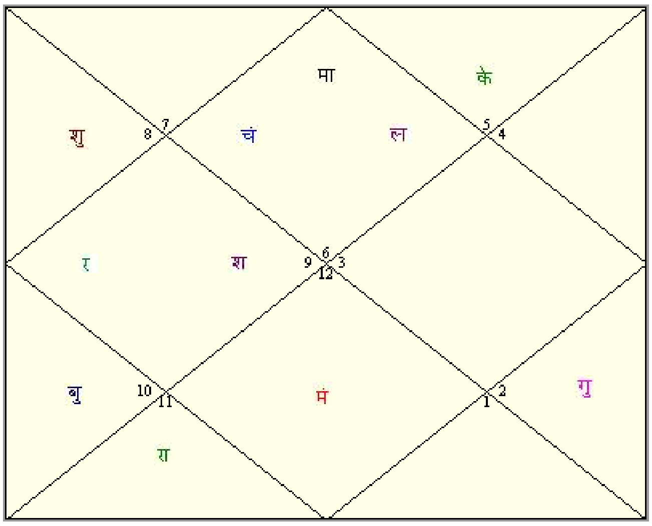

भाव टेबुल

भाव	आरंभ (प्रारंभ) डिग्रि:मिनिट:सेकेन्ड	मध्य (मध्य) डिग्रि:मिनिट:सेकेन्ड	अन्तिम (अंत) डिग्रि:मिनिट:सेकेन्ड	गृहों भाव में उपस्थित है
1	146:55:52	161:53:33	176:55:52	चं,मा
2	176:55:52	191:58:12	207:0:31	
3	207:0:31	222:2:50	237:5:9	शु
4	237:5:9	252:7:28	267:5:9	र,श
5	267:5:9	282:2:50	297:0:31	बु
6	297:0:31	311:58:12	326:55:52	रा
7	326:55:52	341:53:33	356:55:52	मं
8	356:55:52	11:58:12	27:0:31	
9	27:0:31	42:2:50	57:5:9	गु
10	57:5:9	72:7:28	87:5:9	
11	87:5:9	102:2:50	117:0:31	
12	117:0:31	131:58:12	146:55:52	के

पंचाग भविष्यवाणी

सप्ताह के दिन में। : शनिवार

आपका जन्म रविवार को सूर्योदय के पहले हुआ था. ज्योतिष शास्त् के अनुसार दिन की शुरुवात सूर्योदय के बाद ही होती है. इसलिए आपकी जन्म तिथि शनिवार को माना जायेगा.

शनिवार में जन्म लेने पर यह सूचित करता है कि जब तक कोई परिस्थिति विवश करे आप निष्कर्म रहना चाहते है । बकवाद करने की प्रवृत्ति पर आपको नियंत्रण रखना चाहिए । अक्सर आपको लगेगा कि आप जितना चाहते है उतना खर्च नहीं कर सकते । आप भावात्मक और कोमल प्रकृति के होगें ।

जन्म नक्षत्र : हस्त

जन्म नक्षत्र हस्त है। आप उत्साही, मेधावी, शूरवीर, निडर, मनस्वी, यशस्वी, परदेश में रहनेवाले और दूसरों के काम आनेवाले व्यक्ति हैं। गुरुजनों, विद्वानों और धर्माचार्यों को सम्मान देंगे। सब तरह की संपत्ति प्राप्त होगा, चाहे न्यून मात्रा में ही। शास्त्र के इन वचनों की ओर भी आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहूँगा - 'असत्य भाषणों धूर्तः सुरापो बन्धुवर्जितः। हस्ते जातो नरचैव जायते परदारिकः।।' अर्थात् हस्त नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति असत्य भाषी, धूर्त, मधपी, बन्धुहीन या बन्धुओं से मिलजुल कर न रहनेवाला और परदारगामी होता है।

तिथि : नवमि

नवमी तिथि में पैदा होने वालों की अपनी इच्छाओं की पूर्ति होती है। प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए अति पुरुषार्थ करने वाले हैं। धन और साधन कमाने में विशेष चतुरता प्रकट करने वाले हैं। समस्याओं का कुशलता पूर्वक समाधान करने में निपुण हैं। आप हर कार्य को बड़ी कुशलता से पूर्ण करते हैं। समाज में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त होगा। प्रतिस्पर्धी को पराजित करने में प्रवीणता प्राप्त है। सत्पुरुषों का विरोध और आचार हीन व्यक्तियों का साहचर्य पसंद होगा।

करण : ग्रघभ

क्योंकि आपने तैतिल करना में जन्म लिया है अपने विचारों और वाक्यों पर टिका रहना मुशिकल समझते है । अक्सर आप अपने अनुमानो पर शक्त नही रहते । आप अपना आवास हमेश बदलते रहेगों ।

नित्ययोग : अतीगन्धा

आपका जन्म 'अतिगण्ड' नित्ययोग में हुआ है। इस योग के कारण संगीत, सिनेमा, प्राचीन कला तथा अन्य ललित कलाओं में आप बड़ी रुचि रखते हैं। यह सब होने पर भी लड़ने और झगड़ने में और प्रतिस्पर्धा में भाग लेने में निपुण हैं। आप रीर और मन से दृढ़ हैं। दूसरे लोग आपको आसानी से वश में नहीं कर सकते। तर्क-वितर्क की कला में भी निपुण हैं। अहंकार, पाखंड और क्रोध आपके शत्रु हैं।

भावा भाविष्यवणी

आपके जीवन और व्यवहार पर गृहों के प्रभाव को यह विज्ञापन व्याखा करता है ।इस विज्ञापन में उपस्थित आवृत्ति और विरोध आपके जीवन पर गृहों के परस्पर प्रभाव को सूचित करता है ।

व्यक्तित्व, शारीकि बनावट, सामाजिक स्थिति

जन्मकुण्डली का पहला भाव एक व्यक्ति के व्यक्तित्व, शारीरिक बनावट, सामजिक स्थिति और प्रसिद्वि को सूचित करता है ।

लग्न कन्याराशि में रहने से कफ़ और पित्त के मिश्रण से युक्त स्वास्थ्य प्राप्त होगा। सौन्दर्य से, शारीरिक लावण्य से और आकर्षक वेषभूषा से आप अन्य लोगों के आकर्षण का केन्द्र बनेंगे। कौमार्य से यौवन में कदम रखते-रखते आप में अधिक रूप लावण्य प्रकट होगा। सम वयस्क व्यक्तियों को आप अधिक प्रभावित कर सकेंगे। विपरीत योनि के लोगों के प्रति विशेष प्रकार का मनोभाव रखने वाले हैं। आप निर्भय होते हुए भी विपरीत योनि के लोगों के प्रति विद्वेषात्मक स्वभाव प्रगट करनेवाले हैं। अस्थिवेग की संभावना हैं। सतमार्ग से संपत्ति उपार्जन होगी। रेत, पत्थर इत्यादि के माध्यम से और खेती से लाभ की संभावना है। अर्थात् आपके लिए बिल्डिंग मेटेरियल और कृषि से संबन्धित कार्य भी लाभप्रद हो सकते हैं। रक्षा विषयक कामों और छावनी के निकट निवास इत्यादि से भी इन्कार नहीं किया जा सकता। पशुपालन कार्य में अभिरुचि रखनेवाले हैं। स्वयं का जीवन अनुशासन पूर्ण और व्यवस्थित रखने का सदा प्रयास रहता है। 25से 28 वर्ष तक का समय चिरस्मरणीय होगा। संतान की परवरिश में ज़्यादा ध्यान देना आपके लिए अनिवार्य है। यदि संतान को गुणवान और विद्वान देखना चाहते हैं तो थोड़ा समय उनके लिए निकालें। डराने-धमकाने के बदले प्रेम और अनुरागपूर्ण व्यवहार श्रेष्ठ फल की प्राप्ति दे सकता है। जीवनसाथी से असाधारण कामवासना का अनुभव होगा। आपकी संतान में सौन्दर्य की कमी है ऐसा सोचकर व्यर्थ ही दुःखी होने की आवश्यकता नहीं है। गुण का रूप अधिक स्थायित्व रखता है। जीवनकाल में आप धनवान और श्रीमंत बन पायेंगे। अत्यधिक संपत्ति के मालिक बनेंगे फिर भी कभी-कभी दुःखी होना पड़ेगा। आजीवन काल विदेश या दूरदेश बसने का योग है। विद्या से संबन्धित कार्य में और शिक्षा प्रदान करने के कार्य में एक रस अभिरुचि रखने वाले हैं। आप जन समुदाय के लिए सम्मान और कीर्ति के पात्र बनेंगे। आपका रूप और जीवन दोनों प्रभावशाली दिखाई देंगे। समाज सेवा में अभिरुचि रखने वाले हैं। 'कामातुराणां न भयं न लज्जा' को गलत सिद्ध करने का प्रयत्न ही सम्मान की रक्षा कर सकेगा।

आमदनी का मार्ग कितना भी सरल क्यों न हो फिर भी आर्थिक निर्बलता का सामना करना होगा। फिर भी आर्थिक स्थिति संतोष जनक रहेगी। इसमें घबराने की कोई बात नहीं है। सट्टा और जुए से और उसमें रस लेने वाले मित्रों से दूर ही रहना अच्छा होगा। व्यर्थ के खर्च से बचने के लिए सूक्ष्म दृष्टि अनिवार्य है। जीवन के 18,24,30,36,42,49 और 55 वाँ वर्ष आपके लिए अति महत्वपूर्ण रहेंगे।

लग्नाधिपति पाँचवे स्थान पर हैं। बच्चों के कारण सदा चिंतित रहने के आदि हैं। प्रतिकूल स्थिति में क्रोध को नियंत्रण के आधीन रखना कठिन होगा। उच्च अधिकारियों या बडों से पूरा सहकार प्राप्त होता रहेगा। आप उनके स्नेह और वात्सल्य के पात्र बनेंगे। यह शास्त्र प्रमाण पूरी तरह लागू होगा। 'लग्नो पञ्चमे मानी सुत सौख्यं च मध्यमम्।। प्रथमापत्य नाशच क्रोधी राजप्रवेशकः।।'

चन्द्र प्रथम स्थान पर रहा है। इस कारण सौन्दर्यमय नेत्र और स्वस्थ आरोग्यपूर्ण शरीर प्राप्त होगा। स्वभाव से हर कार्य आत्मीयभाव से करनेवाले हैं।

क्योंकि मंगल गृह लग्न से प्रभावित है आप दानशील होगों ।

गुरु लग्न से प्रभावित है । आप हमेशा अच्छे और साफ कपडे पहनना चाहते है और बोली में अच्छे वाक्यों का प्रयोग करना चाहते है ।

आपके जन्मकुण्डली में शनि गृह का भाव पहली भाव में है और यह अच्छी सूचना नहीं है । दूषित वातवरण और संदेह युक्त दोस्तो से दूर रहना चाहिए ।

धन, भूमि और संम्पति

भूमि, सम्पति, धन, परिवार, बोली, भोजन आदि कुछ महत्वपूर्ण चीजे है जो दूसरी भाव द्वारा सूचित किया गया है ।

दूसरे भाव का स्वामी तीसरे स्थान पर रहने से आप में धैर्य, बुद्धिचातुर्य और श्रेष्ठ स्वभाव का आविर्भाव होगा। स्त्री और पुरुष दोनों के साथ श्रेष्ठ संबन्ध स्थापित होंगे। समूह के बीच जिन कार्यों का निषेध किया जाता है, उन्हीं कार्यों से जुड़े रहने का योग दिखाई देता हैं। अन्यथा ऐसे कार्यों से धन संपन्नता हो सकती है। दानवी वृत्ति के लोगों से संबन्ध स्थापित होगा। आपको ठगपाना सरल न होगा। देवता में भी दानत्व ढूंड निकालेंगे।

ऐसा देखा जाता है कि गुरु दूसरे देव से संयोग में है । आप पुराने ऐतिहासिक पुस्तके पठना पसन्द करते है और अपने ज्ञान को दूसरों तक पहुँचाना चाहते है ।

क्योंकि दूसरा देव और चौथा भाव से प्रभावित है, आप मातृत्व सम्बंधो से धन और सम्पति पा सकते है ।

क्योंकि दूसरा देव सातवी भाव से प्रभावित है आप संन्तानो से धन और सम्पति पा सकते है ।

भाई/बहन

जन्मकुण्डली में उपस्थिति केन्द्र, त्रिकोंण था उच्च भाव में यह सूचित करता है कि अपने भाई - बहन, धैर्य और बुद्दि को सूचित करता है ।

तीसरा भावाधिपति सातवें स्थान पर होने से बालावस्था में अनेक समस्याओं का सामना करना होगा। जीवन के उत्तरार्धकाल में समस्याओं से मुक्ति प्राप्त होगी। स्वतंत्र व्यापार आप के लिए लाभदायक नहीं है। श्रेष्ठ अफसरों या बडों के मार्गदर्शन का लाभ उठाकर प्रगति कर सकते हैं। उच्च अधिकारियों के आधीन रहकर काम करना अच्छा होगा। आप की सेवा के कारण उनसे प्रीति प्राप्त होगी। किसी चीज़ के नष्ट होने या खो जाने का आरोप आप पर लगाया जा सकता है। सरकार या न्यायालय का निर्णय आपको कष्टदायी हो सकता है। धन का अनुचित मार्ग से संग्रह करना महंगा पड़ सकता है। किसीसे अधिक निकटता और गहरी मित्रता बदनामी के अतिरिक्त कुछ और न दे पायेगी।

तीसरे स्थान पर शुक्र होने के कारण जीवनसाथी से स्नेह मिश्रित व्यवहार संपन्न होगा। रीति-रिवाज़ और व्यवहार के कच्चे हैं। इस कारण अनेक आक्षेपों का सामना करना पड़ेगा। आपको कीर्ति, संपत्ति और दीर्घायु प्राप्त होगी।

तीसरे देव और मंगल गृह की उपस्थिति केन्द्र त्रिकोंण था उच्च भाव में यह सूचित करता है कि अपने भाई /बहन से सम्बधित विषयों के लिंए अच्छा होगा । इस प्रकार का अनुकूल गृह मिलन इस जन्मकुण्डली में देखा जाता है ।

तीसरे भाव के उपस्थित शुभ गृह आपके भाई - बहन को दीर्घयु प्रधान करता है ।

शुक्र तीसरे भाव में उपस्थित है और गुरु से प्रभावित है ।

संपत्ति, विध्या क्षेत्र इत्यादि के विषय में।

चतुर्थ भाव, चतुर्थेश कारक और संबन्धित ग्रहों की योग, युतिदृष्टि के माध्यम से संपत्ति विद्या-बुद्धि, माता, भूमि , भवन और वाहन आदि का सूचित करता है। इस पत्रिका में इस विषय का विवरण निम्नांकित है।

आपके जन्म पत्रिका के चौथे भाव का स्वामी नौवे भाव में स्थित है। इसे भाग्य का जोड़ कह सकते हैं। आपके जीवन में पिताजी की बड़ी अहमियत होगा। आपको मिली हुई संपन्नता और प्रगति के कारण आपके पिता हैं। संपत्ति कमाने का भाग्य भी आप को प्राप्त है। जीवन में मिली हुई खुशी आप परिवार के बीच बाँटना पसंद करते हैं। शिक्षण कार्य में भी श्रेष्ठ प्रगति होगा।

चौथे भाव का स्वामी गुरु (बृहस्पति) है। श्रेष्ठ धार्मिक प्रचारक तुल्य लक्ष्यबोध आप में प्रकट हो उठेगा। धर्म गुरु सा सम्मान प्राप्त होगा। आपका व्यक्तित्व विद्यार्थी काल में और सभी कार्यक्षेत्र में सहयोगी बनेगा। आपकी आत्मीयता और स्वाभिमानी स्वभाव आपके मुख्य लक्षण है। एक न्याय मूर्ति के तुल्य समता और समभावपूर्ण व्यवहार आपकी शोभा में ओर भी बढ़ावा देगा। आपकी मानसिक परिपक्वता और निर्णयात्मक शक्ति उल्लेखनीय है।

सूर्य चौथे भाव में स्थित होने से आप को अकारण परेशान होकर अपने और दूसरों के सुख में बाधा ड़ालने के आदि हैं। व्यर्थ ही अस्वस्थ होने के भी आदि हैं। इन कारणों से व्यर्थ ही परिवार के लोग और मित्र परेशान होंगे। अकारण भटकने की संभावना है। पारिवारिक

संपत्ति मिलने का योग है। दार्शनिक वाद-विवादों में विशेष रुचि रखनेवाले हैं। राजकारण की खटपटों से दूर रहना आपके लिए लाभदायी होगा। मातृ सुख के निमित्त प्रयत्नशील रहना होगा। छाती या पेट में विकार के लक्षण प्रकट होते ही वैद्यकीय परामर्श तत्काल लेना उचित होगा।

दर्शन, राष्ट्रमीमांसा, मनोविज्ञान, धातुविज्ञान और मानवजीवन के विकास कार्यों में नैसर्गिक अभिरुचि आप में बचपन से ही विकसित हुई है। लोक कल्याण के कार्यों में सदा मग्न रहने के कारण मानसिक शान्ति प्रदान होगी। मानव कल्याण के सर्व कार्य सुंदरता से कर पायेंगे।

शनि आपके चौथे भाव में स्थित है। आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। आप आलसी स्वभाव के हैं। मातृसुख इच्छानुसार न प्राप्त होने से अप्रसन्न रहेंगे। सामान्यतः एकान्त प्रिय हैं। कुछ संबन्धियों से आपका अप्रिय व्यवहार होगा। मकान, गाडी इत्यादि के सिलसिले में तैयार किए कागज़ात पर हस्ताक्षर करने से पहले ठीक पढाई कर लेना आवश्यक होगा। परिवार के सुख और समृद्धि के लिए कई स्थानों पर भाग-दौड़ करनी होगी। शनि का 'स्थान वृद्धि कर मंद' वचनानुसार अन्ततः चतुर्थ भाव संबन्धी सुख मिलकर ही रहेंगे।

बच्चे, मन, बुद्धि

जन्मकुण्डली में उपस्थित पाँचवी भाव बच्चे, मन और बुद्धि को सूचित करता है ।

बुध पाँचवें स्थान पर रहा है। आश्चर्यपूर्ण आकस्मिक घटनाओं के प्रति अति अभिरुचि रखनेवाले व्यक्ति हैं। सांस्कृतिक और विनोदयुक्त कार्यों में आपकी अभिरुचि रहती है। आप छोटे परिवार के अंग बनेंगे। लौकिक कार्यों के साथ साथ आध्यात्मिक कार्यों में भी अभिरुचि रहेगी।

पाँचवां भावाधिपति चौथे स्थान पर रहने से अपने कारोबार में निपुणता प्रगट होगी। मातृ पक्ष से सद्भाग्य, बुद्धिशक्ति, संतोष और संपत्ति निश्चित ही प्राप्त होगी। सौन्दर्यपूर्ण वातावरण का सर्जन होगा। आप की माता दीर्घायु होगी। प्रतिष्ठा और उच्च पद प्राप्त करना सरल होगा।

लग्न से लेकर पाँचवी भाव में शुभ गृहों की उपस्थिति चन्द्र, गुरु था शुभ गृह जो इस भाव से प्रभावित है, बच्चों के जन्म के लिए उचित माना जाता है । ऐसे उचित सूचनाएँ को इस जन्मकुण्डली में दिखाया गय है

रोग, शत्रु , मुसीबतें

छठा भाव रोग, शत्रु और विधों को सूचित करता है ।

राहु छठ्ठे स्थान पर रहा है। वह संपत्ति का मालिक है। दीर्घ आयु का जीवन प्राप्त है। चर्मरोग के लक्षण प्रकट होते ही तुरन्त डाक्टरी इलाज करना बुद्धिगम्य माना जायेगा। प्रणय संबन्ध से दूर रहना अच्छा होगा। क्योंकि उसमें संतोष कम और दुःख ज़्यादा प्राप्त होगा।

छठे भावाधिपति के चौथे स्थान पर रहने से मातृ सुख में न्यूनता का अनुभव होगा। आप यूँ बुद्धिमान हैं लेकिन हृदय से चंचल स्वभाव के व्यक्ति हैं। आप के बारे में अनेक अपवादों का प्रचार होगा। ईर्ष्या और द्वेष से बचते रहना हितकर होगा। सुनी हुई बात को बढ़ा चढ़ा कर प्रस्तुत करने की आदत से भी बचें। नेत्रों में लालिमा या रोग प्रकट होते ही डाक्टर से परामर्श लेना लाभप्रद होगा।

वैवाहिक जीवन और सातवें स्थान की ग्रहदशा।

वैवाहिक जीवन से जुड़े हुए गुणदोष का निर्णय, सातवें स्थान, सप्तमेश, सप्तमकारक और अन्य ग्रहों की युति-दृष्टि के आधार पर किया जाता है।

सातवाँ भावाधिपति नवमें स्थान पर है। उम्र की अपेक्षा आप की पत्नी छोटी होते हुए भी, वह कार्यकुशल और विवेकशील स्त्री रहेगी। आप मितभाषी हैं और आप की अर्धांगिनी स्वभाव से वाचाल है। उसके वाचाल स्वभाव के कारण अनेक छोटे-मोटे प्रश्न उत्पन्न हो सकते हैं। गृह के छोटे-मोटे कार्य के निर्वाह के लिए समय का अभाव उत्पन्न होता रहेगा। बच्चों के अभ्यास क्षेत्र में गुण-दोष मिश्रित फल प्राप्ति होता रहेगा। आप की प्रगति विवाह के बाद होग । विदेश से अनेक लोगों के माध्यम से सहयोग और लाभ प्राप्त होगा। ईर्ष्यालु पड़ोसी का सामना करना पड़ेगा। उन लोगों के साथ हर कार्य में आत्मनियंत्रण लाभदायक रहेगा।

दक्षिण दिशा से उत्तम जीवन संगिनी प्राप्त होने की संभावना रखते हैं।

मंगल सातवें स्थान पर हैं। विवाह कार्य में विलंब या विध्न की संभावनायें हैं। विवाह के बाद पत्नी से प्रेरणा शक्ति प्रदान होगी। अन्य कोई दुरुपयोग न कर बैठे इसका ध्यान रखना आवश्यक है। आपके मन की इष्ट-अनिष्ट इच्छाओं का ठीक जगह पर प्रकट करना होगा। अन्यथा बाद में पछताना होगा। मानसिक बोझ उठाने का और मानसिक क्लेशों के आधीन होने की संभावनायें रखते हैं। ठीक प्रकार से जागरूक रहना होगा। अन्यथा मानसिक दबाव के अंत में विस्फोटित संजोग उपस्थित हो सकते हैं। आप बुद्धिमान है, फिर भी व्यवहार कुशलता में कच्चे हैं। मन जितना विकल्पों से भरा रहेगा उतनी ही कार्यशक्ति क्षीण होता जाएगा ।

चन्द्र गुरु के स्वाधीन है। इस कारण आपका वैवाहिक जीवन मंगलमय और सुखद् रहेगा। यह निश्चित है।

शुक्र पर गुरु की दृष्टि पड़ने से अन्य दोषयुक्त फलों की शक्ति क्षीण होग ।

दीर्घायु , मसीबतें

आठँवा भाव दीर्घायु, बैध्य चिकित्स और मुसीबतों को सूचित करता है ।

आठवाँ भावाधिपति सातवें स्थान पर रहने से जीवनसाथी से सुमेल और सहयोग स्थापित करने में ज़्यादा प्रयत्नशील रहना होगा। अपने कार्यक्षेत्र में भी अनेक मुश्किलों का सामना करना होगा। जीवनसाथी के स्वास्थ्य के प्रति ध्यान देना लाभदायक होगा। भक्तिपूर्ण कार्यों में अभिरुचि रहेगी। लेकिन वह गुप्त रहेगी। आप अपने मनोभाव जल्दी से अभिव्यक्त नहीं करते। अन्य की संपत्ति आपको प्राप्त होगी।

भाग्योदय, अनुभूतियाँ और पैत्रिक उपलब्धियों का विवरण।

नवमा भावाधिपति तीसरे स्थान पर है। साहित्य कार्य से या वृकतत्व कला के माध्यम से या अन्य किसी कलात्मक क्रिया से कोई संस्था से अर्थ संपन्न होने की संभावना है। आप उपरोक्त कला में सफलता प्राप्त करने वाले पुरुष हैं। भाई बहन से सहयोग सुलभता से प्राप्त होगा। 'सहजगते सकृतपतौ रूप स्त्रीबंधु वत्सलः पुरुषः'

आपके नौवे भाव में बृहस्पति रहने से आप नियम और दर्शन के अच्छे ज्ञाता होंगे। 'नरपतेः सचिवः सुकृतो कृती.....'

नवमा भावाधिपति गुरु (बृहस्पति) के सानिध्य में है। अतः अनेक प्रगति का कारण बन सकता है। भाग्येश आपको अनिष्ठों से बचा सकता है। परिश्रम करने से सफलता प्राप्त होग ।

नवमें भाव पर स्थान ग्रहण किया हुआ बृहस्पति अनेक सुख संपत्ति की प्राप्ती दिलानेवाला है। अनेक अनिष्ठ कारक फलों से मुक्त रखने वाला है।

पेशा

फलदीपिका के श्लोको के अनुसार दसवी भाव व्यापार, श्रेणी था पद, कर्म, जय - विजय, कीर्ति, त्याग, जीविका, आकाश, स्वभाव, गुण, अभिलाषा, चाल था गति और अधिकार को सूचित करता है ।

सरर्वात्त चिन्तामणि के अनुसार ज्योतिषियों को दसवी भाव से काम (उधोग) अधिकार, शक्ति, कीर्ति, वर्षा, विदेश राज्यों में जीवन, त्याग का मनोभाव, सम्मान, आदर, जीविका मार्ग, व्यवसाय या पेशा, को निर्णय करना चाहिए । आपके लिए सूचित किए गए ज्योतिष सम्बधित व्यावसाय और पेशा के अन्तर्दृष्टि को दसवी भाव, उसमें उपस्थित अधिपति, गृह, सूर्य और चन्द्र का स्थान आदि तत्वों के विश्लेषण के द्वारा प्रस्तुत किया गया है ।

आप के जन्मकुण्डली में दसवी भाव के स्वामी को पाँचवे भाव में स्थान दिया है । ब्रिहत्त पारासरा होरा श्लोकों के अनुसार आप विधा के विभिन्न शाखा में कुशल होगा । आप को बेठा होगा ।

दसवी भाव मिथुन राशी है । यह चिनह् शास्त्रीय स्त्री, सम्पादक और जसूस बनाएगा। यह आपको एक ही समय दो उघोग ें में काम करने की क्षमता प्रधान करते है । इस चिनह् का विशिष्ट स्वभाव है इसकी ज्ञान शक्ति और प्रतिभा । इस राशी के प्रभाव में आनेवाले लोग

बौद्विक काम से सम्बधित होगा । आप स्कूल अध्यापिका, प्रोफेसर, इंजीनियर, किसी कार्य का अधिकारी, भाषान्त विधा, संपादक, संवाददाता, बिक्रेता, पयर्टक को संचालन करने वाला, फोटोग्राफी, खुदरा प्यापारी, आदि क्षेत्रों में अच्छी तरह काम कर सकते है । इजीनियरिगं, निर्वाहन. करार करना, छपाई, डाक सेवा, विधुत, सामाचार माध्यम आदि क्षेत्रों में आप सफल हो सकते है ।

सूर्य से लेकर चन्द्र दसवी भाव में उपस्थित है । आप दुख से मुक्त, ईमानदार और अपने कर्म में सफल रहेगी । आप धनिक, शुद्व, शक्तिशाली और उदार होगा । चन्द्र बचैन और परिवर्तनशील है । यह सूचित करता है कि आपके उधोग में भी अनेक परिवर्तन होगा । आप जो परियोजना को सूक्ष्मता से संभले उसमें सफलता पा सकती है । चन्द्र. जो एक स्त्री गृह है, यह सूचित करती है कि आपके उधोग में एक स्त्री की महत्वपूर्ण प्रभाव होगा। आप अपने माता से घन दान में पा सकते है । आप विदेशी संम्बधों और यात्रों से लाभ उठा सकते है । चन्द्र आपको सार्वजनिक जीवन में अभिलाषा प्रधान करता है । आपको अनेक मित्र होगें जो आपके उधोग में सहायक होगा ।

कन्या राशी उपस्थित चन्द्र आपको पूर्णता वादी बनाएगी । आप पीडितों और दुखी लोगें से दयालु और कोमल होगा ।

जन्मकुण्डली में उपस्थित गृहों के स्थानों के आदार पर प्रस्तुत किए गए विश्लेषण के अलावा कुछ साधारण विधि नीतियाँ भी जन्म नक्षत्र से प्राप्त कर सकते है । आपके जन्म नक्षत्र से सम्बधित उधोग क्षेत्र निम्नलिखित है ।

दूरसंचार, उपगृह, इन्टरनेट्ट, नेट्टवर्क स्वास्थ्थ अधिकारी, विदेशी का माल देश में लाना, आयात और निर्यात करना, व्यापार, राजप्रतिनिधि, राजनीतिक सेना । गुल्म, वस्त्र, रेशा, प्रकाश विज्ञान, विक्रियक।

गुरु दसवी भाव के रुप में उपस्थित है । यह आपके अच्छे परिणामों को मजबूत बनाता है ।

आमदनी

ग्यारहवी भाव आमदनी और आमदनी के मार्गे को सूचित करता है ।

ग्यारहवाँ भावाधिपति लग्न स्थान पर रहने से आप स्वभाव से निश्छल और आत्मीयता रखने वाले व्यक्ति हैं। हर समस्या का तटस्थ भाव से अवलोकन करने में और निर्णय लेने में निपुण हैं। साहित्य के प्रति नैसर्गिक अभिरुचि रखने वाले व्यक्ति हैं। हर कार्य में सफलता आप का साथ देगी। आप विजयी बनेंगे। लाभदायी अनेक संजोग प्राप्त होंगे। विवाह के बाद ऐश्वर्य में अभिवृद्धि होगी। समदर्शी के रूप में ख्याति मिलना संभव है।

ग्यारहवी देव केन्द्र स्थान पर है । आप धन और संम्पति पा सकते है ।

खर्च , व्यय, नष्ट

बारहवी भाव खर्च और नष्ट के बारे में सूचना देते है

बारहवाँ भावाधिपति चौथे स्थान पर रहने से माँ के माध्यम से मिलने वाले सुख में न्यूनता रहना संभव होगी। भू, भवन और वाहन संबन्धी कार्यो में पर्याप्त संघर्ष करने के बाद ही सफलता मिलना संभव होगी।

केतु बारहवें स्थान पर रहने से चिंतन कार्य में आप चपल हैं। आप शशक्त मन और आत्मा के मालिक हैं। व्यर्थ के खर्च करने के आदी हैं।

अनुकूल समय

उधोग या पेश के लिए अनुकूल समय

लग्न अधिपति, दसवी अधिपति, दसवी भाव और लग्न में उपस्थित शुभ गृह, लग्न और दसवी भाव में बृहस्पति का दृष्टि और अन्य िवषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय उधोग के लिए अनुकूल है ।

15 उम्रे से लेकर 60 उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
राहु	बुध	12-05-2004	29-11-2006	अनुकूल
गुरु	शनि	18-07-2016	29-01-2019	अनुकूल
गुरु	बुध	29-01-2019	06-05-2021	उचित
गुरु	केतु	06-05-2021	12-04-2022	अनुकूल
गुरु	शुक्र	12-04-2022	11-12-2024	अनुकूल
गुरु	रवि	11-12-2024	29-09-2025	अनुकूल
गुरु	चन्द्र	29-09-2025	29-01-2027	अनुकूल
गुरु	मंगल	29-01-2027	05-01-2028	अनुकूल
गुरु	राहु	05-01-2028	31-05-2030	अनुकूल
शनि	बुध	03-06-2033	11-02-2036	अनुकूल
शनि	गुरु	17-11-2046	31-05-2049	अनुकूल

गुरू कें विविध घरों सें ट्रान्झीट या पहलू का विचार करतें हुए, निचें दियें काल करीयर योग्य पायें गये है।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
29-09-2005	28-10-2006	अनुकूल
11-12-2008	01-05-2009	अनुकूल
31-07-2009	20-12-2009	अनुकूल
03-05-2010	01-11-2010	उचित
07-12-2010	08-05-2011	उचित
18-05-2012	31-05-2013	अनुकूल
20-06-2014	14-07-2015	उचित
13-09-2017	11-10-2018	अनुकूल
31-03-2020	30-06-2020	अनुकूल
21-11-2020	06-04-2021	अनुकूल
15-09-2021	21-11-2021	अनुकूल
14-04-2022	22-04-2023	उचित

02-05-2024	15-05-2025	अनुकूल
19-10-2025	05-12-2025	उचित
03-06-2026	31-10-2026	उचित
26-01-2027	26-06-2027	उचित
27-12-2028	29-03-2029	अनुकूल
26-08-2029	25-01-2030	अनुकूल
02-05-2030	23-09-2030	अनुकूल
06-03-2032	12-08-2032	अनुकूल
24-10-2032	18-03-2033	अनुकूल
29-03-2034	06-04-2035	उचित
16-04-2036	10-09-2036	अनुकूल
18-11-2036	26-04-2037	अनुकूल
17-09-2037	17-01-2038	उचित
12-05-2038	07-10-2038	उचित
04-03-2039	02-06-2039	उचित
04-12-2040	06-05-2041	अनुकूल
01-08-2041	02-01-2042	अनुकूल
11-06-2042	28-08-2042	अनुकूल
17-02-2044	02-03-2045	अनुकूल

विवाह के लिए अनुकूल समय

सातवी अधिपति, सातवी भाव में उपस्थित गृह जैसे शुक्र, राहु, चन्द्र , बृहस्पति का दृष्टि और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय विवाह के लिए अनुकूल दिखाई पढ़ता है ।

18 उम्रे से लेकर 50 उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
राहु	केतु	29-11-2006	18-12-2007	अनुकूल
राहु	शुक्र	18-12-2007	18-12-2010	उचित
राहु	रवि	18-12-2010	11-11-2011	अनुकूल
राहु	चन्द्र	11-11-2011	12-05-2013	अनुकूल
राहु	मंगल	12-05-2013	31-05-2014	उचित
गुरु	शनि	18-07-2016	29-01-2019	अनुकूल
गुरु	बुध	29-01-2019	06-05-2021	अनुकूल
गुरु	केतु	06-05-2021	12-04-2022	अनुकूल
गुरु	शुक्र	12-04-2022	11-12-2024	उचित
गुरु	रवि	11-12-2024	29-09-2025	अनुकूल
गुरु	चन्द्र	29-09-2025	29-01-2027	अनुकूल
गुरु	मंगल	29-01-2027	05-01-2028	उचित
गुरु	राहु	05-01-2028	31-05-2030	उचित
शनि	शुक्र	22-03-2037	21-05-2040	अनुकूल

गुरू के विविध घरों से ट्रान्झीट या पहलू का विचार करतें हुए, निचें दियें काल विवाहायोग्य पायें गये है।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
11-12-2008	01-05-2009	अनुकूल
31-07-2009	20-12-2009	अनुकूल
03-05-2010	01-11-2010	उचित
07-12-2010	08-05-2011	उचित
18-05-2012	31-05-2013	अनुकूल
20-06-2014	14-07-2015	उचित
13-09-2017	11-10-2018	अनुकूल
31-03-2020	30-06-2020	अनुकूल
21-11-2020	06-04-2021	अनुकूल
15-09-2021	21-11-2021	अनुकूल
14-04-2022	22-04-2023	उचित
02-05-2024	15-05-2025	अनुकूल
19-10-2025	05-12-2025	उचित
03-06-2026	31-10-2026	उचित
26-01-2027	26-06-2027	उचित
27-12-2028	29-03-2029	अनुकूल
26-08-2029	25-01-2030	अनुकूल
02-05-2030	23-09-2030	अनुकूल
06-03-2032	12-08-2032	अनुकूल
24-10-2032	18-03-2033	अनुकूल
29-03-2034	06-04-2035	उचित
16-04-2036	10-09-2036	अनुकूल

व्यापार के लिए अनुकूल समय

दूसरा, नौवाँ, दसवी और ग्यारहवी अधिपति, लग्न और ग्यारहवी भाव में बृहस्पति, लग्न और ग्यारहवी भाव में बृहस्पति का दृष्टि , और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय व्यापार के लिए अनुकूल दिखाई पड़ता है ।

15 उम्रे से लेकर 60 उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
राहु	बुध	12-05-2004	29-11-2006	अनुकूल
राहु	शुक्र	18-12-2007	18-12-2010	अनुकूल
राहु	चन्द्र	11-11-2011	12-05-2013	अनुकूल
गुरु	शनि	18-07-2016	29-01-2019	अनुकूल
गुरु	बुध	29-01-2019	06-05-2021	उचित
गुरु	केतु	06-05-2021	12-04-2022	अनुकूल
गुरु	शुक्र	12-04-2022	11-12-2024	उचित
गुरु	रवि	11-12-2024	29-09-2025	अनुकूल
गुरु	चन्द्र	29-09-2025	29-01-2027	उचित
गुरु	मंगल	29-01-2027	05-01-2028	अनुकूल
गुरु	राहु	05-01-2028	31-05-2030	अनुकूल
शनि	बुध	03-06-2033	11-02-2036	अनुकूल
शनि	शुक्र	22-03-2037	21-05-2040	अनुकूल
शनि	चन्द्र	03-05-2041	02-12-2042	अनुकूल
शनि	गुरु	17-11-2046	31-05-2049	अनुकूल

गुरू के विविध घरों से ट्रान्झीट या पहलू का विचार करतें हुए, निचें दियें काल व्यवसाय योग्य पायें गये है।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
29-09-2005	28-10-2006	अनुकूल
11-12-2008	01-05-2009	अनुकूल
31-07-2009	20-12-2009	अनुकूल
03-05-2010	01-11-2010	उचित
07-12-2010	08-05-2011	उचित
18-05-2012	31-05-2013	अनुकूल
20-06-2014	14-07-2015	उचित
13-09-2017	11-10-2018	अनुकूल
31-03-2020	30-06-2020	अनुकूल
21-11-2020	06-04-2021	अनुकूल
15-09-2021	21-11-2021	अनुकूल
14-04-2022	22-04-2023	उचित
02-05-2024	15-05-2025	अनुकूल
19-10-2025	05-12-2025	उचित
03-06-2026	31-10-2026	उचित
26-01-2027	26-06-2027	उचित
27-12-2028	29-03-2029	अनुकूल
26-08-2029	25-01-2030	अनुकूल
02-05-2030	23-09-2030	अनुकूल
06-03-2032	12-08-2032	अनुकूल
24-10-2032	18-03-2033	अनुकूल
29-03-2034	06-04-2035	उचित
16-04-2036	10-09-2036	अनुकूल
18-11-2036	26-04-2037	अनुकूल
17-09-2037	17-01-2038	उचित
12-05-2038	07-10-2038	उचित
04-03-2039	02-06-2039	उचित
04-12-2040	06-05-2041	अनुकूल
01-08-2041	02-01-2042	अनुकूल
11-06-2042	28-08-2042	अनुकूल
17-02-2044	02-03-2045	अनुकूल

गृह निर्माण के लिए अनुकूल समय

चौथा अधिपति, शुभ गृह जिसका दृष्टि चौथा भाव और चौथा अधिपति पर है, और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अ पहारा समय गृह निर्माण के लिए अनुकूल दिखाई पत्ता है ।

15 उम्रे से लेकर 80 उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
राहु	शुक्र	18-12-2007	18-12-2010	अनुकूल
गुरु	शनि	18-07-2016	29-01-2019	अनुकूल
गुरु	बुध	29-01-2019	06-05-2021	अनुकूल
गुरु	केतु	06-05-2021	12-04-2022	अनुकूल
गुरु	शुक्र	12-04-2022	11-12-2024	उचित
गुरु	रवि	11-12-2024	29-09-2025	अनुकूल
गुरु	चन्द्र	29-09-2025	29-01-2027	अनुकूल
गुरु	मंगल	29-01-2027	05-01-2028	अनुकूल
गुरु	राहु	05-01-2028	31-05-2030	अनुकूल
शनि	शुक्र	22-03-2037	21-05-2040	अनुकूल
शनि	गुरु	17-11-2046	31-05-2049	अनुकूल
बुध	शुक्र	23-10-2052	24-08-2055	अनुकूल
बुध	गुरु	15-06-2061	21-09-2063	अनुकूल

गुरू के विविध घरों से ट्रान्झीट या पहलू का विचार करतें हुए, निचें दियें काल घर निर्माण योग्य पायें गये है।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
11-12-2008	01-05-2009	अनुकूल
31-07-2009	20-12-2009	अनुकूल
03-05-2010	01-11-2010	उचित
07-12-2010	08-05-2011	उचित
18-05-2012	31-05-2013	अनुकूल
20-06-2014	14-07-2015	उचित
13-09-2017	11-10-2018	अनुकूल
31-03-2020	30-06-2020	अनुकूल
21-11-2020	06-04-2021	अनुकूल
15-09-2021	21-11-2021	अनुकूल
14-04-2022	22-04-2023	उचित
02-05-2024	15-05-2025	अनुकूल

19-10-2025	05-12-2025	उचित
03-06-2026	31-10-2026	उचित
26-01-2027	26-06-2027	उचित
27-12-2028	29-03-2029	अनुकूल
26-08-2029	25-01-2030	अनुकूल
02-05-2030	23-09-2030	अनुकूल
06-03-2032	12-08-2032	अनुकूल
24-10-2032	18-03-2033	अनुकूल
29-03-2034	06-04-2035	उचित
16-04-2036	10-09-2036	अनुकूल
18-11-2036	26-04-2037	अनुकूल
17-09-2037	17-01-2038	उचित
12-05-2038	07-10-2038	उचित
04-03-2039	02-06-2039	उचित
04-12-2040	06-05-2041	अनुकूल
01-08-2041	02-01-2042	अनुकूल
11-06-2042	28-08-2042	अनुकूल
17-02-2044	02-03-2045	अनुकूल
14-03-2046	22-03-2047	उचित
19-08-2047	11-10-2047	अनुकूल
29-03-2048	13-08-2048	अनुकूल
29-12-2048	03-04-2049	अनुकूल
28-08-2049	08-03-2050	उचित
03-04-2050	19-09-2050	उचित

दशा अपहार फल

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मानव जीवन को भिन्न दशाओं में विभाजित किया गया है। ग्रहों के स्थान और स्थिति के अनुसार योग और योगों की शक्ति के अनुसार दशा-फल होता है। सत्ताईस नक्षत्रों को तीन तीन के समूह में बांट कर नौ दशाओं में विभाजित किया गया है। इनके अधिकार के समय को दशा कहते हैं। बच्चों के जो अप्रायोगिक फल होते हैं वे माँ-बाप को बाधक होते है। उसी तरह पति-पत्नी के बारे में भी फल का निर्णय करना है। तालिका देखकर दशाओं का आरंभ और अंत समझ लेना है। सप्तवर्गो के आधार पर ग्रहों का बलाबल निश्चित किया गया है।

गुरु दशा

इस दशा में परिवार के सदस्यों, साथियों और अन्य लोगों की सहायता प्राप्त होती है। उनकी सहायता से आपकी बड़ी उन्नति होगी। परिवार के बड़े या ऊपर के अधिकारियों का अनुकूल भाव बना रहेगा। बच्चों तथा मित्रों का स्नेह और प्यार आपको मिलेगा। इष्ट जनों से अलग रहना पड़ेगा। ई.एन.टी से संबन्धित रोग के लक्षण प्रकट होते ही डाक्टर से संपर्क करना उचित होगा। कानों में कोई न कोई रोग होने की संभावना है। जीवन में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त होगा। सफलता की चोटी पर पहुँचेंगे। अविवाहित लोगों के लिए विवाह के लिए और संतान प्राप्ति के लिए यह उचित समय माना जाता है। कोई सरकारी कार्य आपके हाथों में सौंपा जायेगा। सफलता और कीर्ति आपके पाँव चूमेगी। उच्च अधिकारियों से और बड़ों से प्रशंसा प्राप्त होगी। वे आपके कार्य से संतुष्ट होंगे। मित्रजनों से आनंद मिलेगा। यह सुख होते हुए भी कुछ मित्रों से बिछड़ना पड़ सकता है। गुरुदशा का आरंभकाल कष्टमय और अंतिम काल सुखद हो सकता है।

बृहस्पति बलविहिन स्थिति में रहा हैं। अतः शुभ फलों में न्यूनता रहेगी।

अभ्यास क्षेत्र में निराशा का सामना करना पड़ेगा। अकारण दुःखपूर्ण घटना घट सकती है। अशुभ कार्यो के प्रति अशक्त होना पड़ेगा। उत्तर दिशा से दुःखद घटना घट सकती है। छोटी उम्र के व्यक्ति के साथ निकट का संबन्ध समस्या पैदा कर सकता है। अशुभ चिंतन के कारण मन उद्वेग से पीड़ित रहेगा। किसी भी कार्य में सफलता या विजय के चिन्ह दिखाई नहीं देंगे। स्वयं, पुरुषार्थ के माध्यम से, श्रेष्ठ चिंतन द्वारा आन्तरिक शुद्धि और शाँति प्राप्त कर सकते हैं। यह एक ही बात आपके बस में है।

(18-07-2016 >> 29-01-2019)

बृहस्पति की दशा में शनि की अन्तर्दशा में, अपना मन नियन्त्रण में न रह पायेगा। मन में बुरे विचार आते रहेंगे। नशा करना, जुआ खेलना, बुरी संगति में पड़ना, काला बाज़ारी आदि करने की इच्छा होना इत्यादि फल मिलेंगे। आपके मन में ऐसी कल्पना होगी कि आपको दूसरे लोग कोई महत्व नहीं दे रहे हैं। दुष्टों से बचते रहना बुद्धिगम्य होगा। मानसिक उदासी उत्पन्न होगी। वर्तमान स्थिति से पीछे हटने का भ्रम होगा।

(29-01-2019 >> 06-05-2021)

बृहस्पति दशा में बुध की अन्तर्दशा में भलाई के कामों में मन लगेगा। अब तक न प्राप्त होनेवाले आनन्दों का अनुभव होने लगेगा। मान्य लोगों से परिचय प्राप्त होगा। उनके सहयोग के साथ अनेक कार्य आकार लेंगे। निस्वार्थभाव से समाज सेवा करने की अभिरुचि उत्पन्न होगी। नीच वृत्ति के लोग आपके लिए अफवायें फैलाने का प्रयास करेंगे। इस कारण दुःखी भी होना पड़ेगा। अभ्यास क्षेत्र में उन्नति प्राप्त होगी।

(06-05-2021 >> 12-04-2022)

बृहस्पति दशा में केतु की अन्तर्दशा में आपको अपने स्थान से हटाया जा सकता है। वर्तमान स्थल से दूर जाना होगा। विदेश यात्रा का योग है। यदि विदेश जाने का प्रयत्न पूर्व से ही हो रहा होगा तो सफलता निश्चित रूप से प्राप्त होगी।

(12-04-2022 >> 11-12-2024)

बृहस्पति दशा में शुक्र की अन्तर्दशा में आपको प्रतिकूल स्थिति का सामना करना होगा। आपके स्नेही मित्र या दोस्त दुश्मन में परिवर्तित होंगे। सभी दिशाओं से असुविधा होगी। आपको लज्जित बनानेवाली बातें हो सकती है। आर्थिक उन्नति ज़रूर होगी। आपको विश्लेषण तथा ध्यानिरत होने का मनोबल बढ़ेगा। नए गृह उपकरण प्राप्त होंगे। इस समय अन्य स्त्रियों से रुकावट पैदा हो सकती है। जीवन साथी या जीवन संगिनी को शारिरिक विकार का सामना करना पड़ जा सकता है।

(11-12-2024 >> 29-09-2025)

बृहस्पति दशा में सूर्य की अन्तर्दशा में शत्रुओं की शक्ति क्षीण होगी। आपको मेहमान के रूप में कई पार्टियों में तथा मनोरंजन कार्यों में भाग लेना पड़ेगा। आतिथ्य सन्मान प्राप्त होगा। आप अपनी प्रतिष्टा एवं मान्यता में वृद्धि का एहसास करेंगे। लंबी यात्राओं से होनेवाले कष्ट दूर होंगे। सामान्य स्वाधीनता बढ़ेगी। समूह के बीच सन्मान और मान्यता प्राप्त होगी।

(29-09-2025 >> 29-01-2027)

बृहस्पति दशा में चन्द्र के अपहार में आप सब तरह के शारीरिक-भौतिक सुखों का अनुभव कर पायेंगे। लोग जो आप का सान्निध्य पसन्द न करते थे वे अब आप से मिलने जुलने की आशा के साथ आप के पास आयेंगे। यह जन सम्मति के लिए अच्छा समय है। विवाह, संतान और प्रगति विषय में भी यह समय उत्तम रहेगा।

(29-01-2027 >> 05-01-2028)

बृहस्पति दशा में मंगल के अपहार में आत्मविश्वास जाग्रत होगा। आपकी निडरता और साहस सीमातीत योग्यता नहीं मानी जायेगी। अनिष्ट कार्यों के प्रति मन लुभायेगा। आप प्रसिद्ध और प्रतिष्टित होंगे। आप को बचपन की मीठी बातों का संस्मरण करने का सन्दर्भ प्राप्त होगा।

(05-01-2028 >> 31-05-2030)

बृहस्पति दशा में राहू के अपहार में आप द्वारा किए गये श्रेष्ठ कार्यों का विपरीत फल प्राप्त होगा। ऐसी परिस्थिति में पीछे हटना पड़ेगा। स्वनिवास स्थान से दूर हटकर शाँत रहना लाभदायक होगा। पीड़ित स्वजनों की व्यथा देखकर मन व्याकुल होगा। शारीरिक विकार और मानसिक संताप होगा।

शनि दशा

शनि, दुःख, अंगहीनता, रोग, कष्ट और अन्य मुसीबतों का देवता है। इस दशा में ऊँच-नीच, सुख-दुःख दोनों का अनुभव होगा। सरकार या उच्च अधिकारियों के माध्यम से धन लाभ हो सकता है। अनेक सेवक और सहायकों से आपको सहायता मिलेगी। अच्छी आमदनी भी हो सकती है। व्यापार के भागीदार या सन्तान से सुख में कमी होने की संभावना है। कुछ कारणों से मन चंचल रहेगा। हाथों और पैरों में कोई पीड़ा होने की संभावना है। श्रेष्ठ नायक का पद सफलता पूर्वक संभाल पायेंगे। जीवन के उत्तरार्ध काल में शनिदशा के कारण, अपनों से बड़ी उम्र की महिला के साथ संपर्क होने की संभावना है। इस तरह का संपर्क यदि लंबे समय तक रहता तो अयोग्य बंधनों में फँसने की भी संभावना है। आप से हीन स्थिति में रहनेवाले व्यक्तियों से रिश्ता जुड़ सकता है। बड़प्पन, प्रतिष्ठा, सुवर्णाभूषण और धनादि की प्राप्ति होगी। धार्मिक स्थान के निर्माण में सहयोग देना संभव होगा।

शनि निर्बल दशा में रहा है। शुभ फलों की प्राप्ति में बाधा आयेगी।

शत्रुगृहों के बीच शनि की उपस्थिति है। इस कारण वह दोषग्रस्त है। इस काल में सुख की अपेक्षा करना व्यर्थ है।

पौष्टिक आहार और नियमित व्यायाम के अभाव के कारण शारीरिक दुर्बलता का अनुभव होगा। कोर्ट-कचहरी के धक्के खाने पड़ सकते हैं। अपनों से बड़ों के साथ झगड़ा हो सकता है। वियोग के संजोग सृजित होंगे। वियोग का दुःख भोगना पड़ सकता है। प्रगति और सफलता के मार्ग में अनेक बाधायें आयेगी। उन बाधाओं से बचने के लिए अति श्रम करना पड़ेगा। दुःख भोगना पड़ेगा। अकारण क्रोध उत्पन्न होगा।

(31-05-2030 >> 03-06-2033)

शनि की दशा में शनि की अन्तर्दशा में आप क्रोधी और झगड़ालू बनेंगें। छोटे छोटे झगड़ों के प्रति मन आकर्षित होगा। इस प्रकार के व्य वहार के कारण बाद में पछताना होगा। आपको दूर देशों की यात्रा करनी पड़ेगी। आप का निवास स्थान अपने घर से दूर रहेगा। नीच वृत्ति के लोगों का सहवास रखना पड़ेगा।

(03-06-2033 >> 11-02-2036)

शनि की दशा में बुध की अन्तर्दशा में आप को अनेक प्रकार के लाभ होंगे। आपकी इच्छाएँ सफल होगी और लक्ष्यप्राप्ति भी होगी। प्रगति की प्रतीक्षा कर सकते हैं। कर्तव्यबोध जाग उठेगा। प्रोत्साहन और सहायता चारों ओर से आपको प्राप्त होगी। अप्रतिक्षित लोगों से सहायता मिलेगी। निवास स्थान में बदली होगी। नौकरी में स्थानान्तरण की आशंका है।

(11-02-2036 >> 22-03-2037)

शनि की दशा में केतु की अन्तर्दशा में आप को दुःख होते रहेंगे। ध्यान और प्रार्थना से कुछ शाँति प्राप्त हो सकती है। संग्रहित की गई चीज़ें नष्ट होने की संभावना है। आपके मार्ग में असुविधाएँ और रुकावटें आती रहेगी। आप के व्यक्तिगत स्वातंत्रय पर अनेक नियंत्रण लगाये जायेंगे। निद्रा में भयभीत करनेवाले स्वप्न सतायेंगे।

(22-03-2037 >> 21-05-2040)

शनि की दशा में शुक्र के अपहार में आप श्रेष्ठ मित्रों से संबन्ध स्थापित करेंगे। सहायता की कमी नहीं रहेगी। आपके सहयोगी की सहायता, आपकी प्रगति में प्रमुख स्थान लेगी। घर की मरम्मत एवं नवीनीकरण संभव है। साहित्य में रुचि भी दिखायी देगी। विवाहादि मांगलिक कार्य होंगे।

(21-05-2040 >> 03-05-2041)

शनि की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा में आपके कारण निकट के संबन्धी पीड़ित होंगे। अनेक समस्याओं का सामना करना होगा। स्नेहजनों के प्रति शंका-कुशंका उत्पन्न होगी। यह आपके जीवन तथा संबन्ध में बुरा प्रभाव ड़ालेगा। आप अपनी नौकरी में उदास हो जायें तो फल बहुत बुरा होगा। इसलिए सतर्क रहें। कठिन परिश्रम करके किसी न किसी तरह मन का संतुलन बनाये रखना है। मनोबल को स्थिर बनाना आवश्यक है।

(03-05-2041 >> 02-12-2042)

शनि की दशा में चन्द्र की अन्तर्दशा में स्थिति दुःखद होगी। जीवन में मृत्यु तुल्य दुःखद घटनायें घटित हो सकती हैं। अपने मन को श्रेष्ठ ि वचारों से शान्त रखना आवश्यक है। प्रारंभ में ही प्रश्नों को ठीक तरह हल न करने पर जन्मस्थान छोड़कर जाना पड़ेगा। विरक्त और घृणाशील स्थिति में वृद्धि होने की संभावना है। किसी के वियोग की संभावना है।

बुध दशा

31-05-2049

इस दशा में बड़े लोगों की सहायता प्राप्त होगी। ज़मीन, जानवर, चिड़िया और अच्छे साथियों से आनन्द प्रदान होगा। लोगों के सहायक होने से उनका आदर और प्यार आपको प्राप्त होगा। आध्यात्मिकता और दानशीलता आपके गुण बने रहेंगे। इस दशा में स्वास्थ्य संबन्धी बाधा कभी कभी हो सकती है। व्यक्तिगत उन्नति तथा साहित्यिक प्रवृत्तियों के विकास के लिए यह समय उपयुक्त रहेगा। आप जो स्नातक् हों तो उ परोक्त कार्य से बड़ा लाभ होगा। भवन निर्माण या प्राप्ति होगी। स्त्री-पुत्रादि विषयक फल प्राप्त होंगे।

केतु दशा

✵ 31-05-2066

इस दशा में मानसिक शान्ति कम होगी। मुसीबतें आती रहेंगी। मन का नियन्त्रण करना आवश्यक है। नहीं तो मानसिक विषमताओं में पड़कर निराश होने की संभावना है। शरीर व मन को दृढ़ करने के लिए किसी दवा आदि का लेना अच्छा होगा। समय समय पर कई समस्याएँ आपके सामने आयेंगी। अपवाद और शंका का शिकार होने की संभावना भी है। स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए डाक्टरों को दिखाना और उनकी सलाह के अनुसार उपचार करवाना अच्छा है। केतु अच्छे स्थान पर रहता है तब धन, पारिवारिक सुख आदि देनेवाला होता है। इस दशा में गरीबी, बुद्धिशून्यता और शारीरिक अस्वस्थता साधारण होगी। बालावस्था में यदि केतु दशा आती हैं तो शिक्षण कार्य में अनेक बाधाएं आती हैं। आपकी आयु यदि जीवन के पूर्वार्ध काल व्यतीत कर चुकी है तो, किसी बंधु से बिछड़ना या वंचित होना संभव होगा। हर समस्या से बचना कठिन है। मानसिक बोझ और मनोव्यथा अनुभव होने की संभावना है। इस दशा का पूर्व ज्ञान होने पर कुछ कठिनाइयों से बच सकते हैं। भक्तिपूर्ण जीवन से मानसिक शाँति प्राप्त होगी। महिलाओं के निमित्त अन्य लोगों से संबन्ध बिगड़ सकते हैं। मानहानी, धन नाश और दाँत का दर्द सर्वसाधारण होगा। कुछ समय बाद असाधारण संपत्ति सुख और चारों ओर आनन्दपूर्ण वातावरण की प्रतीक्षा कर सकते हैं।

केतु वर्गबल से सशक्त हो रहा है। इस दशा में आप शुभ फलों की आशा कर सकते हैं।

इस दशा में आप पहले से अधिक दार्शनिक और ईश्वरोपासक बनने की संभावना रखते है। औषधियों से आपको अच्छी कमाई हो सकती है। आपको पारिवारिक सुख और सुविधा मिलेगी। आडंबरयुक्त जीवन प्रिय लगेगा। धार्मिक कार्यों में बड़ा ध्यान होगा। इस दशा में तन्दुरुस्त रहना संभव है। सुख और शान्ति से दिन बीतेंगे।

ग्रह दोष और उपाय

कुजदोष

जन्मपत्रिका में मंगल के प्रभाव को महत्वपूर्ण द्रुष्टी से देखा जाता है। मंगल या कुज विवाह संबन्धी कार्यों पर अपना प्रभाव डालने वाला होता है। जब मंगल जन्मकुंडली के सातवें या आठवें स्थान पर रहता है तो अमंगलकारी या दोषयुक्त माना जाता है। शास्त्रोक्त ग्रन्थों के आधार से यह पता चलता है कि सातवें या आठवें स्थान पर रहते हुए मंगल, दोष ग्रस्त होकर भी उसका प्रभाव खास कारण से क्षीण हो जाता है या अप्रिय हो जाता है। कुज दोष या मंगलदोष को समझने के लिये यहाँ विस्त्रित रूप से विश्लेषण किया गया है। निम्न लिखित बातों से पता चलता है कि आपकी जन्मपत्रिका में मंगल किस प्रकार शुभ-अशुभ फल उत्पन्न करता है।

इस जन्मपत्रिका में मंगल, जन्म कुंडली में सातवँ स्थानपर रहा है।

यह स्थिती दोषपूर्ण है।

जन्मकुंडली में लग्न स्थान की अपेक्षा मंगलदोष का विश्लेशण किया गया है।

इस जन्मकुंडली में मंगल का दोष दिखाई देता है।

स्पष्टीकरण

थकान बिना प्रयास आपके सुखी परिवार जीवन का महत्वपूर्ण घटक है। आशावाद और मेहनत सें कठिणाईयों पर काबू पाने में मदद मिल सकती है। हानी रोकने हेतू, आपने पैसो कें मामलों में जादा ध्यान देना चाहिए। आप साहसी स्वभाव और प्रयास सें कठिनाई पर हल निकालनें में सक्षम है। निर्णय लेते समय साथी और बच्चो की पसंद पर ध्यान देने सें आपका परिवार जीवन में सुधार आयेगा। आपने परि वार में असहमती नही दिखानी चाहिए। बुरी साथ और बुरी आदतें टालने सें आपके साथी कों आपके बारे में अच्छा लगेगा।

उपचार

सातवे घरकें कुज कें अशुभ परिणाम कम करने हेतू, आप निचे दियें उपाय कर सकते है

कुज दोष प्रभावों को कम करने के लिये 8 सुमांगली स्त्रीयों को हल्दी, कुमकुम केले/फल, हल्दी लिप्त नारीयल इत्यादी भेट दें।

राहु दोष और केतु दोष

राहु और केतु अस्पष्ट ग्रह है। उनकी ग़ति परस्पर संबंधित है और एकही अंग के भाग होने के कारन सभी समय वह एक दुसरों कें ि वरूद्ध है किन्तु दृष्टि सें विचार करते हुए, वह एक दुसरों सें संबंधित है। सामान्य रूपसें, राहु सकारात्मक है और गुरूकें प्रती लाभदायी है और इसलिए वह विकास और स्व-मदद कें लिए कार्य करता है और केतु बंधन और शनीकें विघ्न दर्शाता है और इसलिए विकास में बाधा लाता है। इसप्रकार, राहु सकारात्मक उद्देश्य दर्शाता है और केतु विकास की सहज संधि दर्शाता है। इसलिए, राहु भौतीकवाद और इच्छा सूचित करता है, तथा केतु आध्यात्मिक प्रवृत्ति और भौतीकवाद क़ी सुक्ष्मता प्रक्रिया दर्शाता है। राहु को कपट, धोखा और बेईमानी कें लिए माना जाता है।

राहु दोष

आपकी जन्मकुंडली में राहु दोष नही।

राहु दोष कें उपाय

आपकी जन्मकुंडली में राहुदोष न होने सें, आपने कुछ उपाय करनें की जरूरत नही।

केतु दोष

आप अच्छी तरीके सें खर्चा करके पैसो के बारे में स्थिरता पा सकते है। पैसा कमाना और परिवार को सुख देना आपके लिए कठीन

नही। विनयशील रहने सें कभी-कभी बुरा समय और नुकसान हो सकता है। आप अडचनें और ऋण पर दृढता सें जीत पा सकते है। साथी से अनुभव बाटने सें मन की शांती और कार्य अच्छे होगे। आपने बुरी संगत और परिणाम सुखी और स्वास्थ्य जीवन हेतू टालने चाहिए। आपकों आखें छोड के शरीर के उपरी भाग के विकार हो सकते है। पेट का निचा भाग और प्रोस्ट्रेट भाग की परवाह करें.

केतु दोष हेतू उपाय

केतु दोष के बुरे परिणाम कम करने हेतू, आप निचे दिये उपाय कर सकते है। सफेद कपडे की बॅग में कुछ ग्राम चना लें और सोने से पूर्व उसे तकिए के निचे रखे। आपने वह सुबह उठकर कौवे को डालने चाहिए। ऐसे लगातार 9 दिन करें, और अंतीम दिन भगवान गणेशजी के मंदीर में शाम में दर्शन लें। स्वेच्छा सें दान करकें परिक्रमा करें। केतुकवचयंत्र लेकर समर्पीत भाव सें पहने। केतु कें लिए आराधना देवता - भगवान गणेश और हनुमान. उनकें मंदीर में दर्शन लेके स्वेच्छा सें दान करें। घरमें सुदर्शन चक्र रखे और केतु दोष के परिणाम कम करने हेतू निचे दिया श्लोक पढें।

अस्मिक मंडले अधिदेवता
प्रथ्याधिदेवता साहिथम
केकीग्रम धयायामि आवाहायामी

श्रीं ॐ नमो भगवती श्री शूलिनी
सर्व भुतेश्वरी ज्वाला ज्वाला मायी सुप्रदा
सर्व भूतादि दोषाया दोषाया
केतुरग्रह निपीडीताथ नक्षत्रे
राशोजाथाम सर्वनाम मम
मोक्ष मोक्ष स्वाः

परिहार

नक्षत्र परिहार

क्योंकि आपने हस्त नक्षत्र में जन्म लिया है आपका नक्षत्र के चन्द्र है । समालोचन करने पर आप गौरव भाव प्रकट करेगों । यह आपके सफलता के मार्ग में रुकावट बन जाएगा । जन्म नक्षत्र का आधार पर कुछ गृहों का दाश आपके लिए प्रतिकूल है । हस्ता नक्षत्र होने के बावजूद राहु, शनि और केतु दाश में आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

इस समय आपके विचार और कार्य में अनेक प्रकार का प्रत्यक्ष परिवर्तन दिखाई देगा । ऐसा परिस्थिति भी होगा जब आप अपने बुद्धि के साथ स्वार्थता को भी नियुक्त करेगा । इस समय अप दूसरों के गलतियों को संकेत करने में दिलचस्प होगें । जीवन में आपको ऊंचाई और नीचाई के अनुक्रमण का अनुभव होगा । अपने धर से दूर रहना पड़ेगा । इस समय लाभहीन चीजों की ओर साधारण रुप से ज्यादा झुकाव होगा ।

कन्या जन्म राशी का अधिपति बुध है । ऐसा परिस्थिति भी होगा जब आपको विधा और व्यवहार के बारे में व्यक्त अनुमान प्रस्तुत करना पडेगा । आपका विचार के लिए लाभदायक है, यह जानना जरुरी है । धार्मिक कार्यों का परिणाम पाने में देर लगेगा । स्वाती, अनुराधा, मूल, अशविनी, भरणी, और कृत्तिका नक्षत्र सामान्य रुप से अनुकूल नहीं होगा ।

इस प्रतिकूल दाश में अपने वाक्य और व्यवहार पर नियंत्रण करना चाहिए, मुख्यतः विरुद्व नक्षत्रों पर । अनावश्यक झगड़ो से दूर रहने की कोशिश करें । इस समय दूसरों के मामलों में दखल देने से दूर रहे ।

लौकिक प्रतिविधिक मर्यादों की प्रवर्तन करने से प्रतिकूल प्रभाव को शान्त कर सकते है ।

प्रतिकूल दाश में चन्द्र और माता देवी की प्रार्थना करता लाभदायक है । माता देवी की आर्शिवाद के लिए हस्ता, श्रावण और रोहिणी नक्षत्र के दिवस पर मंदिर में दर्शन करना चाहिए । हस्ता नक्षत्र और सोमवार जिस दिन साथ आता है, उस दिन विशुद्वता के साथ उपवास रखना उचित होगा ।

अच्छे फल प्राप्ती के लिए रोज चन्द्र की प्रार्थना करना चाहिए । इसके अलावा रोज पुराणों और धार्मिक पुस्तकों का पारायण करना चाहिए । वस्त्रों को चुनते समय सफेद और हरे रंग को ज्यादा महत्व देना चाहिए । यह चन्द्र को प्रसन्न करने के लिए सहायक होगा ।

इसके अलावा गृह के अधिपति को प्रसन्न करने का लक्ष्य आपके ऊपर भाग्य को वर्षित करेगा ।

हस्त नक्षत्र का अधिपति सूर्य है । सूर्य को प्रसन्न करने के लिए और अच्छे परिणाम के लिए इनमें से किसी मंत्र को विश्वास से अलापन करना चाहिए।

1 ऊँ विभ्राद् भ्रिहत्तपिभतु सौम्यम् मद्धायुर्धदध
ध्यज्ञपता वर्विहुतं वातजुतोयो
अभिरक्षतित्मन प्रजाः पुपोष पुरुध विराजति

2 ऊ सवित्रे नमः

इसके अलावा, जानवरों,पक्षियों और पेड़ो का संरक्षण करना शुभकारक है । मुख्यतः हस्तनक्षत्र का जानवर गाय का संरक्षण करना और उसके साथ हीन व्यवहार न करने से आपके जीवन में ऐश्वर्य और समृद्धि प्राप्त होगा ।हस्त का औधोगिक पेड, अंभषम् पेड और उसके शाखओं को काटना नहीं चाहिए और औधोगिक पक्षी , कौआ को पीड़ा नहीं देना चाहिए । हस्त नक्षत्र का मूलतत्व अगनि है । अगनि देव की पूजा करने से और दिया जलाने से इस जन्म नक्षत्र के लोगो को भाग्य प्रधान करेगा ।

दाश परिहार

दश के हानिकारक प्रभावो का परिहार हर गृह के दाश में भाग्य और निर्माग के सामान्य झुकाव जन्मकुण्डली में उपस्थित गृहों के स्थानों

पर आधारित है । गुणकारक और हानिकारक गृहों का प्रभाव यह सूचित करता है कि कुछ दाश समय आपके लिए अनुकूल नही है । प्रतिकूल दाश समय के हानिकारक प्रभावों को कम करने के लिए आपको कुछ धार्मिक विधियों का आचरण करना पडेगा । जन्मकुण्डली में उपस्थित प्रतिकूल दाश समय और उसके लिए किए जाने वाले धार्मिक विधियों के बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

दशा :शनि

आपका शनि दाश 31-5-2030 को शुरु होता है ।

आपका जन्म नक्षत्र हस्त है । दाश के अधिपति का हानिकारक संयोग है । इसलिए इस दाश में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

इस जन्मकुणडली के गृहो के अनुसार, आपको शनि दाश में प्रतिकूल स्थितियो से गुजराना पडेगा । अपको अप्रत्याशित रुकावटों औप मुसिबतों का सामना करना पडेगा । आप प्रतिकूल स्थितियों से लड़ नहीं सकते । अनावश्यक परेशानी आपके नीद के लिए हानिकारक होगा । शनि दाश के हानिकारक प्रभावो की तीव्रता बुध के स्थान परिवर्तन पर बदलता रहता है । जब शनि प्रतिकूल स्थान पर है जो मुसीबतों का सामना करना पडेगो उसके बारे में यहाँ कहा गया है । जब शनि कमजोर है, अक्सर जीवन में आने वाले मुसीबतों का धैर्यपूर्वक सामना करना पडेगा । आपको हमेश परिज्ञान के साथ विचारों कों व्यवस्था करने और उसे आचरण की क्षमता नहीं होगा । इसलिए वित्तसम्बधी नष्ट होगा । इस समय बड़ों के साथ आपका रिशत अस्वाभविक होगा । सामान्य रुप से आपके सामाजिक लेन देन में आवेश की कमी मेहसूस होगा । भोजन स्वास्थ्थकर हो, इसके लिए ध्यान रखना चाहिए । इस समय रोगें से मुकाबला करने की शक्ति कम हो जाएगा । आप रोगें से जल्दी विलंभ नहीं होगें । शनि के बुरे प्रभाव से आपको बहुत अधिक सहना पडेगा । जब शनि प्रतिकूल स्थिति में है तो आपके प्रायोगिक चिन्तन शक्ति कम हो जाएगा । आपको अनावश्यक मानसिक परेशनियों से दूर रहना चाहिए । अगर आप इस प्रकार के मुसीबतों का सामना कर रहे है तो यह समझना चाहिए कि शनि प्रतिकूल स्थान पर उपस्थित है । जो लोग इस प्रकार के मुसिबतों को मेहसूस कर रहा है तो उन्हें शनि को शान्त कराने केलिए कुछ मार्ग अपनाना चाहिए । सूर्य को शान्त रखने पर आपके ऊपर जो हानिकारक प्रभाव है, उसको कम कर सकते है और जीवन सुख से बरा होगा । इस जन्मकुण्डली में के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर शनि दाश में जो विशिष्ट आज्ञाओं का पालन करना चाहिए उसके बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

वस्त्र

नीला और काला रंग शनि गृह के लिए प्रिय है । इन रंगे के वस्त्र पहनने पर आप शनि गृह को शान्त कर सकते है । हानिकारक प्रभावें को कम करने के लिए आपको शनिवार को नीले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए ।

देवता भजन

शनि दाश के हानिकारक प्रभावों को दूर करने के लिए भगवान शिव और श्री अय्यप्प भगवान का पूजा करना चाहिए । कुछ ज्योतिषयों ने भगवान हनुमान देव को पूजा करने का राय प्रस्तुत किया है । केरल के ज्योतिषियाँ भगवान अय्यप को पूजा करने का राय रखता है । काला या नील वस्त्र पहनकर वृत लेकर अय्यप्प भगवान के मंदिर में दर्शन, भगवान के लिए दिया जलाना और तिल का मधुर रस से अभिषेक शनि गृह को शान्त कराने का मार्ग है ।

उपवास

उपवास खाध्य पदार्थ के उपयोग के किफायत करने की आचरण को सूचित करता है । इसके अलावा उपवास रखना और अनुष्ठानों का पालन करने का मुख्य लक्ष्य है अपने मन और शरीर को शुद्व करना । अपने लिए विशिष्ट दिनों में और गृहों के अनुरुप दिनों में उपवास रखना चाहिए । शनि गृह को शान्त करने के लिए आपको शनिवार में उपवास रखना चाहिए । इस समय श्री अय्यप्प भगवान के मंदिर में दर्शन, भगवान के लिए दिया जलाना और तिल का मधुर रस से अभिषेक आदि उच्चित है । शनिवार के दिन पीपल पडे की परिक्रमण करना लाभदायक है । समय उपवास रखते समय अय्यप्प मंदिर में दर्शन करना चाहिए । उपवास केसमय मदिरा, माँस पदार्थ और मदोन्मत करने वाले चीजों का उपयोग नहीं करना चाहिए । इन दिनों में प्राकृतिक खाध्य पदार्थ जैसे फल, सब्जी और हरे पत्ते जो पचाने के लिए सहायक है उपयोग करना चाहिए । अजान सम्बधी चीजें, तेलहा गरम और खट्ट खाध्य पदार्थ को रोकना चाहिए । आप अंशातः या

पूरी तरह हानिकारक प्रभावों के तीव्रता के अनुसार उपवास रख सकते है । धूमधाम और विलास में आसक्त होना उचित नहीं है । आपका उपवास तभी सफल होगा जब आप अपने आवेग और वाक्यशैली पर समय रखे ।

दान

शनि गृह को शान्त करने के लिए आपको तिल, काला गाय, नील माणि, तिल का तेल, लोहे से बना शनि का मूर्ति, काला रेशम, काला धान्य आदि को दान देना चाहिए । गरीबों को भोजन दान देना उचित है । एक बरतन, में थोड़ा तिल का तेल डालकर अपने प्रतिबिंब को देखकर उस तेल को दान देना चाहिए । इससे अच्छा फल प्राप्त होगा ।

पूजा

शनि को शान्त करने के लिए कुछ पूजा विधियों को विर्देश किया है । नीला कमल, नीला जपाकुसुम आदि से शनि पूजा किया जाता है । तिल और कालेदाल से अभिषेक भी बनाया जाता है । नव गृहों के मदिर में दर्शन करना, गुरु गृह को नील कमल से आभूषित करना और दिया जलाना लाभदायक है । निपुण ज्योजिषियों के उपदेश के अनुसार ही यह पूजा विधि का पालन करना चाहिए ।

मन्त्रों का आलापन

जिन लोगों को धार्मिक अनुष्ठानों और परिहारों का पालन करने में पारिभाषिक मुसीबत है, वे प्रार्थना के द्वारा शनि का अनुग्रह और कृपा जीत सकते है ।

ॐ सूर्यपुत्राय विहमहें
शनैश्चराय धीमहि
तनो मन्दः प्रचोदयात्

अत्यन्त विश्वास और भक्ति से इन मंत्रों का आलापन करने पर ही आपको फल सिद्दि प्राप्त होगा ।

शनि गृह का मौलिक मंत्र शनि को प्रसन्न करने के लिए शनि के विविध नाम से सम्मिलित किए गए मन्त्र का आलापन करना चाहिए । मन्त्र इस प्रकार है

ॐ शनैश्चराय नम :
ॐ शान्ताय नम :
ॐ सर्वाभिष्ट प्रदायिने नम :
ॐ शरण्याय नम :
ॐ वरेण्याय नम :
ॐ सर्वेशाय नम :
ॐ सौम्याय नम :
ॐ सुरवन्द्याय नम :
ॐ सुरलोक विहारिणे नम :
ॐ सुखासनोपविष्टयान नम :
ॐ सुदंराय नम :
ॐ मन्दाय नम :

अंगुलिक यंन्त्र

अगुंलिक यंत्र गृहों को प्रसन्न करने का दुसरा उपाय है । शनि को प्रसन्न करने के लिए स्तुतिपूर्वक अगुंलिक यत्र नीचे प्रस्तुत किया गया है-

12	7	14
13	11	9

8	15	10

इस आविष्कार को विशुद्व मन से पहनने पर हानिकारक प्रभावों का दूर कर सकते है और आपके मन को एक नई शक्ति प्रधान करता है । यदि आप अपने क्षेत्र में सफल होना चाहचे है तो इस यंत्र एक कागज के टुकडे में अंकित करके अपने कार्य क्षेत्र, वाहन या टेबुल पर रखना चाहिए ।

ऊपर दिए गए परिहारा को 31-5-2049 तक आचारण करना चाहिए ।

दशा :केतु

आपका केतु दाश 31-5-2066 को शुरु होता है ।

आपका जन्म नक्षत्र हस्त है । ष्ठुठ्ठद्मण केतु भाव में है । इसलिए इस दाश में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

इस जन्मकुण्डली में उपस्थित गृह स्थानो के अनुसार आपको प्रतिकूल परिस्थितियों से गुजरना पडेगा । जिस जोखिम में आप शमिल हो,जीत के लिए आप डरते रहेगों । इस समय आपके कल्पनाशील अर्न्तज्ञान सभी जगह अपूर्ण हो जएग । क्योंकि यह आपके चिन्ता एकाग्र करने की योग्यता पर प्रभाव पड़ेगा, आपके समझने कि शक्ति भी कम हो जाएगा । केतु दाश के हानिकारक प्रभावो की तीव्रता बुध के स्थान परिवर्तन पर बदलता रहता है । जब बुध प्रतिकूल स्थान पर है जो मुसीबतों का सामना करना पडेगो उसके बारे में यहाँ कहा गया है । जब केतु कमजोर है प्रतिकूल निर्णय लेने की झुकाव होगा । अपनी आवशायकता को पूरा करने के लिए आपको दूसरो पर निर्भर करना पड़ेगा । स्वंय रक्षा की आवश्यकता को आप कम मूल्य देगों । आप इस समय पूर्वकाल में जीना चाहते है । अपने कार्यो में एकान्त बनाए रखने की कोशिश करना चाहिए । आपका शरीरिक उष्णा अधिक हो जाएगा । आपको पचाने से सम्बधित रोगें का अनुभव होगा ।यात्रा करते समय आपको सावधान रहना चाहिए । जब केतु प्रतिकूल स्थान पर है तो आपको दूसरों की जायदाद उपयोग करने का झुकाव होगा । वैवहिक जीवन कायम रखने के लिए आपको संघर्ष करना पडेगा । अगर आप इस प्रकार के मुसीबतों का सामना कर रहे है तो यह समझना चाहिए कि केतु प्रतिकूल स्थान पर उपस्थित है । जो लोग इस प्रकार के मुसिबतों को मेहसूस कर रहा है तो उन्हें केतु को शान्त कराने केलिए कुछ मार्ग अपनाना चाहिए । सूर्य को शान्त रखने पर आपके ऊपर जो हानिकारक प्रभाव है, उसको कम कर सकते है । और जीवन सुख से बरा होगा । इस जन्मकुण्डली में के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर केतु दाश में जो विशिष्ट आज्ञाओं का पालन करना चाहिए उसके बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

वस्त्र

लाल रंग के वस्त्र पहनने पर आप केतु को शांन्त कर सकते है । आप काले रंग का वस्त्र भी पहन सकते है । मंगलवार में आपको लाल रेग का वस्त्र पहनना चाहिए । पूजा करते समय काला और लाल रंग का वस्त्र पहनना उचित है ।

देवता भजन

केतु दाश के हानिकारक प्रभावों को दूर करने के लिए गणेश भगवान का पूजा करना चाहिए । आपने जन्म नक्षत्र में गणेश होम करना, वृत लेकर पूर्ण चन्द्र (चतुरती) के चार दिन बाद गणेश मंदिर में दर्शन, गणेश भगवान का स्तुतिगीत करना आदि से केतु दाश के हानिकारक प्रभावों को कम कर सकते है । कुछ ज्योतिषियाँ चामुण्डी देवी की पूजा करने के लिए सलाह देते है । जिनका केतू ओज राशी में है उनको गणेश भगवान का और जिनका केतु युगम्म राशी में उनको चामुण्डी देवी की पूजा करना चाहिए ।

प्रातकालीन प्रार्थना

प्रातकालीन प्रार्थना हानिकारक प्रभावों को दूर करने के साथ - साथ आपके मन औप शरीर को नयी शक्ति प्रधान करता है । चन्द्र दाश में हमेशा सूर्येदय से पहले उठना चाहिए । अपने शरीर को शुद्व करने के बाद चन्द्र की अनुग्रह की याचना करें । मन से सभी चिन्तओं और िवचारों को दूर करने का विशिष्ट ध्यान रखना चाहिए ।

सूर्याय शीतरुचये धरणीसुताय
सौम्याय देवगुरवे बृगुनन्दनाय
सूर्यात्मजाय भुजगाय च केतवे च
नित्यमं नमो भगवते गुरवे वराय
सौख्यदायिन् महादेव लोकनाथ महामते
आदित्यानिष्टजान् सर्वान् दोषानेत्यान्यपाकुरु
नारायणो ही लोकानाम् सृष्टिस्थित्यान्तकारकः
शिखिनोनिष्टसंभुतम् दोषजातम् निरस्यतु

इस प्रार्थना को हर दिन नीदं से उठते ही शाथ्या में पुरब की दिशा में बैठकर आलापन करना चाहिए ।

उपवास

उपवास खाध्य पदार्थ के उपयोग के किफायत करने की आचरण को सूचित करता है । इसके अलावा उपवास रखना और अनुष्ठानों का पालन करने का मुख्य लक्ष्य है अपने मन और शरीर को शुद्व करना । अपने लिए विशिष्ट दिनों में और गृहों के अनुरुप दिनों में उपवास रखना चाहिए । क्योंकि केतु के लिए कोई शासन करने वाला दिवस नहीं है अपने जन्म नक्षत्र के दिवस उपवास रखकर केतु पूजा करना चाहिए । आश्लेषा, मगह और मूल नक्षत्र के दिन में भी आप उपवास रख सकते है। उपवास के समय मदिरा, माँस पदार्थ और मदोन्मत करने वाले चीजों का उपयोग नहीं करना चाहिए । इन दिनों में प्राकृतिक खाध्य पदार्थ जैसे फल, सब्जी और हरे पत्ते जो पचाने के लिए सहायक है उपयोग करना चाहिए । अजान सम्बधी चीजें, तेलहा गरम और खट्ट खाध्य पदार्थ को रोकना चाहिए । आप अंशातः या पूरी तरह हानिकारक प्रभावों के तीव्रता के अनुसार उपवास रख सकते है । धूमधाम और विलास में आसक्त होना उचित नहीं है । आपका उप वास तभी सफल होगा जब आप अपने आवेग और वाक्यशैली पर समय रखे ।

दान

अच्छे मन से भिक्षा या दान देना अपने पाप परिहार का ललित मार्ग है । केतु को शान्त करने के लिए आप बकरी, आयुध, हरितमणि. लाल था काला रेशम आदि दान कर सकते है । सोना, चाँदीया पंच लोहो से बना मूर्ति दान देना लाभदायक है ।

पूजा

केतु को शान्त करने के लिए कुछ पूजा विधियों को विर्देश किया है ।केतु पूजा के लिए लाल और काले फूलों का उपयोग किया जाता है । जन्म नक्षत्र के दिवस पर या केतु दाश के शुरुआत में आप केतु पूजा कर सकते है । दरभा धास केतु को दान देना वाला मुख्य अंश है ।निपुण ज्योजिषियों के उपदेश के अनुसार ही यह पूजा विधि का पालन करना चाहिए ।

मन्त्रों का आलापन

केत का मंत्र आलापन जिन लोगों को धार्मिक अनुष्ठानों और परिहारों का पालन करने में पारिभाषिक मुसीबत है, वे प्रार्थना के द्वारा केतु का अनुग्रह और कृपा जीत सकते है ।

ॐ चित्रगुप्ताय विदमेह
चन्द्रउच्चाय धीमहि
तन : केतु प्रचोदयात्

अत्यन्त विश्वास और भक्ति से इन मंत्रों का आलापन करने पर ही आपको फल सिद्दि प्राप्त होगा ।

केतु को प्रसन्न करने के लिए केतु के विविध नाम से सम्मिलित किए गए मन्त्र का आलापन करना चाहिए । मन्त्र इस प्रकार है

ऊँ केतवे नम :

ऊँ स्तूलशिरसे नम :

ऊँ शीरो मात्राय नम :

ऊँ द्वजकृतये नम :

ऊँ सिंहिकासुरिगर्भसम्भवाय नम :

ऊँ महाभीतिकराय नम :

ऊँ चित्रवर्णाय नम :

ऊँ श्री पिंगल्लाक्षाय नम :

ऊँ भुल्लद्रुम्सकशय नम :

ऊँ तीक्क्षदंष्ट्राय नम :

ऊँ महारागाय नम :

ऊँ रक्तनेत्राय नम :

अंगुलिक यंन्त्र

अगुंलिक यंत्र गृहों को प्रसन्न करने का दुसरा उपाय है । केतु को प्रसन्न करने के लिए स्तुतिपूर्वक अगुंलिक यत्र नीचे प्रस्तुत किया गया है-

14	9	16
15	13	11
10	17	12

इस आविष्कार को विशुद्व मन से पहनने पर हानिकारक प्रभावों का दूर कर सकते है और आपके मन को एक नई शक्ति प्रधान करता है । यदि आप अपने क्षेत्र में सफल होना चाहचे है तो इस यंत्र एक कागज के टुकडे में अंकित करके अपने कार्य क्षेत्र, वाहन या टेबुल पर रखना चाहिए ।

ऊपर दिए गए परिहारा को 31-5-2073 तक आचारण करना चाहिए ।

दशा और भुक्ती का विवरण काल (साल = 365.25 दिन)

जन्म के समय दशा की समतुलना = चन्द्र 0 साल, 4 महीने, 28 दिन

दशा	भुक्ती	आरंभ	अन्तिम
चन्द्र	सूर्य	01-01-1989	31-05-1989
कुज	कुज	31-05-1989	27-10-1989
कुज	राहू	27-10-1989	14-11-1990
कुज	गुरु	14-11-1990	21-10-1991
कुज	शनि	21-10-1991	29-11-1992
कुज	बुध	29-11-1992	26-11-1993
कुज	केतू	26-11-1993	24-04-1994
कुज	शुक्र	24-04-1994	24-06-1995
कुज	सूर्य	24-06-1995	30-10-1995

कुज	चन्द्र	30-10-1995	30-05-1996

राहू	राहू	30-05-1996	10-02-1999
राहू	गुरु	10-02-1999	06-07-2001
राहू	शनि	06-07-2001	12-05-2004
राहू	बुध	12-05-2004	29-11-2006
राहू	केतू	29-11-2006	18-12-2007
राहू	शुक्र	18-12-2007	18-12-2010
राहू	सूर्य	18-12-2010	11-11-2011
राहू	चन्द्र	11-11-2011	12-05-2013
राहू	कुज	12-05-2013	31-05-2014

गुरु	गुरु	31-05-2014	18-07-2016
गुरु	शनि	18-07-2016	29-01-2019
गुरु	बुध	29-01-2019	06-05-2021
गुरु	केतू	06-05-2021	12-04-2022
गुरु	शुक्र	12-04-2022	11-12-2024
गुरु	सूर्य	11-12-2024	29-09-2025
गुरु	चन्द्र	29-09-2025	29-01-2027
गुरु	कुज	29-01-2027	05-01-2028
गुरु	राहू	05-01-2028	31-05-2030

शनि	शनि	31-05-2030	03-06-2033
शनि	बुध	03-06-2033	11-02-2036
शनि	केतू	11-02-2036	22-03-2037
शनि	शुक्र	22-03-2037	21-05-2040
शनि	सूर्य	21-05-2040	03-05-2041
शनि	चन्द्र	03-05-2041	02-12-2042
शनि	कुज	02-12-2042	11-01-2044
शनि	राहू	11-01-2044	17-11-2046
शनि	गुरु	17-11-2046	31-05-2049

बुध	बुध	31-05-2049	27-10-2051

बुध	केतू	27-10-2051	23-10-2052
बुध	शुक्र	23-10-2052	24-08-2055
बुध	सूर्य	24-08-2055	30-06-2056
बुध	चन्द्र	30-06-2056	29-11-2057
बुध	कुज	29-11-2057	26-11-2058
बुध	राहू	26-11-2058	15-06-2061
बुध	गुरु	15-06-2061	21-09-2063
बुध	शनि	21-09-2063	31-05-2066

केतू	केतू	31-05-2066	27-10-2066
केतू	शुक्र	27-10-2066	27-12-2067
केतू	सूर्य	27-12-2067	03-05-2068
केतू	चन्द्र	03-05-2068	02-12-2068
केतू	कुज	02-12-2068	30-04-2069
केतू	राहू	30-04-2069	19-05-2070
केतू	गुरु	19-05-2070	24-04-2071
केतू	शनि	24-04-2071	02-06-2072
केतू	बुध	02-06-2072	31-05-2073

शुक्र	शुक्र	31-05-2073	29-09-2076
शुक्र	सूर्य	29-09-2076	29-09-2077
शुक्र	चन्द्र	29-09-2077	31-05-2079
शुक्र	कुज	31-05-2079	30-07-2080
शुक्र	राहू	30-07-2080	31-07-2083
शुक्र	गुरु	31-07-2083	31-03-2086

नीचे खीची गई रेखा, आपके आयुष्य को बताने वाली रेखा नही है।

वर्तमान वर्ष से 25 साल तक पर्यन्तर दशा काल

दशा : गुरु अपहार : शनि

1.श	18-07-2016 >> 11-12-2016	2.बु	11-12-2016 >> 22-04-2017
3.के	22-04-2017 >> 15-06-2017	4.शु	15-06-2017 >> 16-11-2017
5.र	16-11-2017 >> 01-01-2018	6.चं	01-01-2018 >> 19-03-2018
7.मं	19-03-2018 >> 12-05-2018	8.रा	12-05-2018 >> 28-09-2018
9.गु	28-09-2018 >> 29-01-2019		

दशा : गुरु अपहार : बुध

1.बु	29-01-2019 >> 27-05-2019	2.के	27-05-2019 >> 14-07-2019
3.शु	14-07-2019 >> 29-11-2019	4.र	29-11-2019 >> 09-01-2020
5.चं	09-01-2020 >> 18-03-2020	6.मं	18-03-2020 >> 06-05-2020
7.रा	06-05-2020 >> 07-09-2020	8.गु	07-09-2020 >> 26-12-2020
9.श	26-12-2020 >> 06-05-2021		

दशा : गुरु अपहार : केतु

1.के	06-05-2021 >> 26-05-2021	2.शु	26-05-2021 >> 22-07-2021
3.र	22-07-2021 >> 08-08-2021	4.चं	08-08-2021 >> 05-09-2021
5.मं	05-09-2021 >> 25-09-2021	6.रा	25-09-2021 >> 15-11-2021
7.गु	15-11-2021 >> 31-12-2021	8.श	31-12-2021 >> 23-02-2022
9.बु	23-02-2022 >> 12-04-2022		

दशा : गुरु अपहार : शुक्र

1.शु	12-04-2022 >> 21-09-2022	2.र	21-09-2022 >> 09-11-2022
3.चं	09-11-2022 >> 29-01-2023	4.मं	29-01-2023 >> 27-03-2023
5.रा	27-03-2023 >> 20-08-2023	6.गु	20-08-2023 >> 28-12-2023
7.श	28-12-2023 >> 30-05-2024	8.बु	30-05-2024 >> 15-10-2024
9.के	15-10-2024 >> 11-12-2024		

दशा : गुरु अपहार : रवि

1.र	11-12-2024 >> 26-12-2024	2.चं	26-12-2024 >> 19-01-2025
3.मं	19-01-2025 >> 05-02-2025	4.रा	05-02-2025 >> 21-03-2025
5.गु	21-03-2025 >> 29-04-2025	6.श	29-04-2025 >> 14-06-2025
7.बु	14-06-2025 >> 26-07-2025	8.के	26-07-2025 >> 12-08-2025
9.शु	12-08-2025 >> 29-09-2025		

दशा : गुरु अपहार : चन्द्र

1.चं	29-09-2025 >> 09-11-2025	2.मं	09-11-2025 >> 07-12-2025
3.रा	07-12-2025 >> 18-02-2026	4.गु	18-02-2026 >> 24-04-2026
5.श	24-04-2026 >> 10-07-2026	6.बु	10-07-2026 >> 17-09-2026
7.के	17-09-2026 >> 16-10-2026	8.शु	16-10-2026 >> 05-01-2027
9.र	05-01-2027 >> 29-01-2027		

दशा : गुरु अपहार : मंगल

1.मं	29-01-2027 >> 18-02-2027	2.रा	18-02-2027 >> 10-04-2027
3.गु	10-04-2027 >> 26-05-2027	4.श	26-05-2027 >> 19-07-2027
5.बु	19-07-2027 >> 05-09-2027	6.के	05-09-2027 >> 25-09-2027
7.शु	25-09-2027 >> 21-11-2027	8.र	21-11-2027 >> 08-12-2027
9.चं	08-12-2027 >> 05-01-2028		

दशा : गुरु अपहार : राहु

1.रा	05-01-2028 >> 16-05-2028	2.गु	16-05-2028 >> 10-09-2028
3.श	10-09-2028 >> 26-01-2029	4.बु	26-01-2029 >> 31-05-2029
5.के	31-05-2029 >> 21-07-2029	6.शु	21-07-2029 >> 14-12-2029
7.र	14-12-2029 >> 27-01-2030	8.चं	27-01-2030 >> 10-04-2030
9.मं	10-04-2030 >> 31-05-2030		

दशा : शनि अपहार : शनि

1.श	31-05-2030 >> 21-11-2030	2.बु	21-11-2030 >> 25-04-2031
3.के	25-04-2031 >> 29-06-2031	4.शु	29-06-2031 >> 29-12-2031
5.र	29-12-2031 >> 22-02-2032	6.चं	22-02-2032 >> 23-05-2032
7.मं	23-05-2032 >> 26-07-2032	8.रा	26-07-2032 >> 07-01-2033
9.गु	07-01-2033 >> 03-06-2033		

दशा : शनि अपहार : बुध

1.बु	03-06-2033 >> 20-10-2033	2.के	20-10-2033 >> 16-12-2033
3.शु	16-12-2033 >> 29-05-2034	4.र	29-05-2034 >> 17-07-2034
5.चं	17-07-2034 >> 07-10-2034	6.मं	07-10-2034 >> 03-12-2034
7.रा	03-12-2034 >> 30-04-2035	8.गु	30-04-2035 >> 08-09-2035
9.श	08-09-2035 >> 11-02-2036		

दशा : शनि अपहार : केतु

1.के	11-02-2036 >> 05-03-2036	2.शु	05-03-2036 >> 12-05-2036
3.र	12-05-2036 >> 01-06-2036	4.चं	01-06-2036 >> 05-07-2036
5.मं	05-07-2036 >> 28-07-2036	6.रा	28-07-2036 >> 27-09-2036
7.गु	27-09-2036 >> 20-11-2036	8.श	20-11-2036 >> 23-01-2037
9.बु	23-01-2037 >> 22-03-2037		

दशा : शनि अपहार : शुक्र

1.शु	22-03-2037 >> 30-09-2037	2.र	30-09-2037 >> 27-11-2037
3.चं	27-11-2037 >> 04-03-2038	4.मं	04-03-2038 >> 10-05-2038
5.रा	10-05-2038 >> 30-10-2038	6.गु	30-10-2038 >> 03-04-2039
7.श	03-04-2039 >> 03-10-2039	8.बु	03-10-2039 >> 15-03-2040
9.के	15-03-2040 >> 21-05-2040		

दशा : शनि अपहार : रवि

1.र	21-05-2040 >> 07-06-2040	2.चं	07-06-2040 >> 06-07-2040
3.मं	06-07-2040 >> 27-07-2040	4.रा	27-07-2040 >> 17-09-2040
5.गु	17-09-2040 >> 02-11-2040	6.श	02-11-2040 >> 27-12-2040
7.बु	27-12-2040 >> 14-02-2041	8.के	14-02-2041 >> 06-03-2041
9.शु	06-03-2041 >> 03-05-2041		

दशा : शनि अपहार : चन्द्र

1.चं	03-05-2041 >> 20-06-2041	2.मं	20-06-2041 >> 24-07-2041
3.रा	24-07-2041 >> 19-10-2041	4.गु	19-10-2041 >> 04-01-2042
5.श	04-01-2042 >> 05-04-2042	6.बु	05-04-2042 >> 26-06-2042
7.के	26-06-2042 >> 30-07-2042	8.शु	30-07-2042 >> 04-11-2042
9.र	04-11-2042 >> 02-12-2042		

दशा : शनि अपहार : मंगल

1.मं	02-12-2042 >> 26-12-2042	2.रा	26-12-2042 >> 25-02-2043
3.गु	25-02-2043 >> 20-04-2043	4.श	20-04-2043 >> 23-06-2043
5.बु	23-06-2043 >> 19-08-2043	6.के	19-08-2043 >> 12-09-2043
7.शु	12-09-2043 >> 18-11-2043	8.र	18-11-2043 >> 09-12-2043
9.चं	09-12-2043 >> 11-01-2044		

खास प्रकार का ग्रहों के बीच रहा संयोग

जन्म कुंडली में गृहों के मुख्य प्रकार के संयोजन से उत्पन्न होनेवाली स्थिति को योग कहते हैं। योग व्यक्ति के जीवन प्रवाह और भविष्य को असर करने वाला होता है। कुछ योग गृहों के साधारण मिलने या संयोजन से उत्पन्न होते हैं। लेकिन विशेष, दूसरे योग जो हैं वह गृहों के कुछ खास प्रकार के संयोजन अथवा जन्मकुंडली में स्थान गृहण करने से उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार के सैकडों मिलन, संयोजन योग इत्यादी के विवरण पुरातन ज्योतिष शास्त्र के ग्रन्थों में दिये गये हैं। कुछ संयोजन से उत्पन्न होने वाले योग लाभदायी रहते है तो कुछ से हानि अथवा अशुभकारी फलों की प्राप्ति होती है। आपकी जन्म पत्रिका में कुछ मुख्य महत्वपूर्ण गृहों से उत्पन्न होनेवाले योगों का विवरण यहाँ दिया गया है।

राज योग

लक्षण: इस जन्मकुण्डली में लाभदायक राजयोग दिखाई पडता है ।

आप शक्ति और अधिकार पद तक पहुँच जाएगों ।

देहपुष्टीयोग

लक्षण: लग्नाधीपती चलायमान बलवंत गृहों के साथ रहा है।

आप बलवंत शरीर के व्यक्ति हैं। आप कठिन परिस्थिति में भी शांत और संतोषी रहते हैं। आप धनवान होंगे और जीवन सुखमय बितायेंगे।

सदसन्चार योग

लक्षण: लग्नाधीपती चनायमान राशी में रहै है।

आप सदा सक्रिय और चलायमान हैं। आपके कार्य क्षेत्र में सफर ज़्यादा रहेगा। आप अपने निर्धारित लक्ष्य को सदा ध्यान में रखें ताकि आप कहीं भटक न जायें।

मात्रुमूलधन योग

लक्षण: दूसरे स्थान का स्वामी चतुर्थस्थान के स्वामीत्व के सहयोग में रहा है।

आपको मातृकृपा के कारण धन संपन्न होगा।

द्विगृह योग

लक्षण: दो गृह एक ही भाव में स्थापित है । रवि,शनि , चौथा भाव में है ।

आप पौरणिक जीवन शैली और धार्मिक प्रक्रिया में दिलचस्प होगों । कुछ समय ऐसा होगा जब आपको अपने परिवार से दूर रहना पड़ेगा ।आपने शैक्षिक योग्यता और सामर्थ्य से उधोग क्षेत्र में आपका पहचान और मान्यता होगा ।

मौढय स्थिती का विवरण।

जब कोई गृह सूर्य के निकट आता है तब वह मौढ्य स्थिती प्राप्त करता है। मौढ्य दशा में गृह अशुभकारी स्थिती उत्पन्न करता है।

शनि मौढ्य दशा में रहा है।

ग्रहयुध्ध

सूर्य और चन्द्र के सिवा अन्यग्रह जब भी एक रेखांश से ज्यादा समीप आते हैं तो ठग्रहयुध्ध' की स्थिती पैदा होती है। ग्रहयुध्ध में जय-पराजय के बारे में अलग-अलग विचार धार बनी रही है। उसकी एक झलक इस प्रकार है। अन्य के बिच उत्तर दिशा की ओर रहे ग्रह िवजई बनते हैं।

इस जन्मकुंडली में कोई भी ग्रहयुध्ध में झुटा नहि है।

उत्थान, क्षीण, मौढ्य, युध्ध और वक्र स्थिती का संक्षिप्त विवरण।

गृह	श्रेष्ढतम स्थिती। / क्षीण या नाजुक स्थिती	संयोजन	ग्रहयुध्ध	विपरीत परिस्थिती	बालादि अवस्था
चं					कुमारावस्था
र					युवावस्था
बु					मित्रवस्था
शु					कुमारावस्था
मं					बालावस्था
गु				विपरीत परिस्थिती	मित्रवस्था
श		सयहोग			कुमारावस्था

अष्टकवर्गा भविव्यवाणी

अष्टकवर्ग

अष्टकवर्गा पध्दति भारतीय ज्योतिष का भविष्यवाणि रीति है जो गृहों की अवस्थिति से सम्बधित अंको के प्रयोग का उपयोग करता है । अष्टकवर्गा का अर्थ है अष्टगुण श्रेणीकरण । यह राहु और केतु का अवरोद करके, लग्न को मिलाकर गृहों को अष्टगुण के बारे में वर्णित करता है । गृहों की शक्ति को मापने के लिए कुछ स्थिर नियमों का पालन किया गय है । एक गृह की शक्ति और उसके प्रभाव की तीव्रता, उससे सम्बधित अन्य गृहों और लग्न की स्थिति पर आधारित है । हर गृह के लिए आठ पूर्ण अंग दिया जाता है । गृहों का 0-8 अंग के आधार पर बदलता हुआ शक्ति होगा ।

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	सभी मिलाकार
मेष	4	2	5	3	4	4	3	25
वृषभ	6	2	2	4	2	5*	2	23
मिथुन	3	6	6	2	5	5	3	30
कर्क	6	4	4	6	3	5	4	32
सिंह	4	3	2	4	1	3	2	19
कन्या	3*	5	5	6	5	5	5	34
तुला	3	6	7	4	5	5	5	35
वृशचिक	5	4	4	6*	3	3	3	28
धनु	2	5*	7	4	2	5	4*	29
मकर	3	4	4*	5	1	5	2	24
कुंम्भ	6	2	3	4	4	5	4	28
मीन	4	5	5	4	4*	6	2	30
	49	48	54	52	39	56	39	337

।गृहों का स्थान.

लग्न कन्या में है ।

चन्द्र का अष्टकवर्गा

आपके जन्मकुण्डली के चन्द्र अष्टकवर्ग में उपस्थित तीन बिन्धु न ही अत्यधिक लाभदायक और न ही अत्यधिक हानिकारक है। निर्भाग और बीमारी अक्सर आपके सामने आएगा फिर भी उनको सामना करने और आगे चलने का शक्ति आपको होगा । अपने माँ की स्वास्थ्य पर ध्यान रखना अच्छा होगा ।

सूर्य का अष्टकवर्गा

सूर्य के अष्टकवर्गा में पाँच बिन्धु है और आप धर्मनिष्ट लोगों के साथ होगा । आपको ज्ञान और उत्तम शिक्षा प्राप्त होगा । आपके सफलताओं पर लोग प्रंशसा करेगें । आपको कभी भी नए कपडों से प्यार नहीं होगा । अपने यौवन और बचपन के समय बहुत से उत्सवों को मना सकते है ।

बुध गृह का अष्टकवर्गा

बुध के अष्टकवर्ग में उपस्थित चार बिन्धु उधोग और रोजगारी के लिए उचित नहीं है । यह एक सूचना होता हुए भी आप हर अवसर पर अच्छी तरह काम करेगें अपने स्थायी पद का मज़बूत करके प्रतिकूल गृह उपस्थिति को शान्त करेगें । उधोग से सम्बधित नष्टों को भोखने के लिए मानासिक शक्ति को उत्पन्न करना चाहिए ।

शुक्र का अष्टकवर्गा

आपमें ऐसा कुछ है जो विविध प्रकार के अद्भुत लोगों के संयोग का आकर्षित करता है । वह तत्व आपके जन्मकुण्डली के शुक्र अष्टक वर्गा में उपस्थित छः बिन्धुओं के कारण है । अपने आकर्षण को सही रुप से सभाँलने पर यह आपके लिए उचित और अनुकूल होगा ।

मंगल गृह का अष्टकवर्गा

आपके जन्मकुण्डली के मंगल अष्टकवर्ग में उपस्थित चार बिन्धु आपको भाग्यवान बनाएगो । यह अवस्थिति गृहों के हानिकारक प्रभावों को कम करने के लिए ओर सहायक होगा और आपको तुल्य रुप से अच्छा और बुरा भाग्य प्रधान करेगा । आपको अत्यधिक आनन्द लेने का अवसर प्राप्त नहीं होगा न हि आपको दुःख के गहराई में डूबना पड़ेगा ।

गुरु का अष्टकवर्गा

आपके जन्मकुण्डली के गुरु अष्टकवर्गा में उपस्थित पाँच बिन्धुँए महत्वपूर्ण वरदान है । यह आपके परिश्रम के लिए सफलता प्राप्त करने में, चुनौतियों का सामना करने के लिए और शत्रुओं से बचने के लिए सहायक होगा । आप इस भाग्यशाली गृहों के अवस्थिति के नीचे जन्म लिया है और इस परिस्थिति के लाभ का अनुभव कर सकते है और सफलता प्राप्त कर सकते है ।

शनि गृह का अष्टकवर्गा

शनि के अष्टकवर्ग में चार बिन्धु है । यह दूसरों से खुशी को सूचित करता है । अपने परिवार रिशतेदारो और दोस्तो से आपको खुशी और सहायता प्राप्त होगा ।

सर्वअष्टकवर्गा भविष्यवाणी

आपके जन्मकुण्डली में लग्न, चन्द्र चिहन, दसवी और ग्यारहवी भाव में तीस और उससे ज्यादा बिन्धु है और चन्द्र गुरु से संयोग में है । आपको शक्ति और प्रभाव को नियंत्रण करने का अवसर मिलेगा । आपका गृह स्थान यह सूचित करता है आप एक विभाग के लोगों का मार्ग दर्शक बनेगा । आप राजनीतिक क्षेत्र, समाजिक प्रश्नो के योद्व या अपने क्षेत्र या समुदाय का मार्ग दर्शक बन सकते है । आपके नक्षत्र का अच्छा प्रभाव आपको उच्च पद जैसे मंत्री या व्यवस्थापक का स्थान प्राप्त करने का भाग्य प्रधान करता है ।

आपके जन्मकुण्डली में तीस से ज्यादा बिन्धु है और नवमी, दसवी और छठे अधिपति से सम्बधित है । आप परिवारिक मूल्यों और सदाचारों के निदेर्शनात्मक गुणों से अनुग्रहित होगें जो आपको अपने परिवार का मार्ग दर्शक और विश्वसनीय बनेगा । निर्णयों और मार्ग दर्शन को सम्मान के साथ अनुसरण करेगाऔर आप पीढी के लिए संकेत दीप बनेगा ।

आपके जन्मकुण्डली ग्यारहवी भाव को दसवी भाव से ज्यादा बिन्धु है, लेकिन बारहवी भाव को ग्यारहवी भाव से कम बिन्धु है और उदीयमान में उपस्थित बिन्धु ग्यारहवी से भी महत्व है । अगर आप चाहे तो भी सम्पत्ति और प्रसिद्वि से दूर नहीं भाग सकते जो किसी ओर के ऊपर धटित है जिनके गृहों का प्रभाव आपके जैसे हो । आपका समृद्वि और प्रसिद्वि जीवन में खुशी के लिए रुकावट नहीं होगा । जरुर ही आपका एक अनुग्रहित जीवन होगा ।

आपके जन्मकुण्डली में बिन्धुओं को अधिकतम फैलाव कर्क राशी से तुला राशी तक है जो आपके यौवन वर्षो को सूचित करता है । आपका उधोग उन्नत पद तक पहुँच सकता है । शैक्षणिक और व्यक्तिगत अभिलाषा इस समय उत्पन्न होता है और संतोष और समृद्वि उच्च स्थान पर होगा । भाग्य आपको बेकारी और शैक्षणिक खिंचाव को अनुभव करना का अवसर नहीं देगा । गृहस्थ सम्बधी चिरानन्द भी

आपको प्राप्त होगा ।

गुरु शुक्र,बुध द्वारा धारण किए राशीि में उपस्थित आकार से सदृश के अनुसार आपका भाग्य बहुत अच्छा होगा । आपका शैक्षिक अभिलाषा आनन्दमय होगा और आपको ऊँइचेपढ़ाई के लिए स्थान प्राप्त होगा । आपको उधोग के क्षेत्र में धन, सम्पत्ति से प्रसिद्दि की ओर ले जाएगा । व्यक्तिगत जीवन में आपको आदर्श युक्त जीवन साथी प्राप्त होगा और वैवाहिक जीवन आनन्दमय होगा । आपके सन्तानों के साथ जीवन अनुग्रहित होगा । यह आपके जीवन का सबसे अनुग्रहित समय होगा ।

आपके लिए यह विशिष्ट समय 23 , 28 और 24 उम्र में होगा ।

गोचर फल

नाम	: Rahul Kumar (पुरुष)
जन्म राशी	: कन्या
जन्म नक्षत्र	: हस्त
गृहस्थिती	: 3-सितंम्बर-2018
अयनांश	: चित्रपक्ष

जन्मस्थ ग्रहों की स्थिति एवं वर्तमान की उनकी गोचर परिस्थिति का सामूहिक अध्ययन करने के बाद, निकट के भविष्य को भलीभाँति जाना जा सकता है। इस विषय में सूर्य, गुरु और शनि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यद्यपि जन्म कुंडली के प्रमुख योगायोग, दशान्तर्दशा तथा वर्तमान में अन्यान्य ग्रहों का गोचर संचार नीचे लिखे फलों में न्यूनाधिक करने की क्षमता रखते हैं।

सूर्य का गोचर फल।

प्रत्येक राशि में सूर्य एक महीने तक रहता है। आपकी जन्म राशि से अगली तीन राशियों में सूर्य जा फल देगा, उसका दिग्दर्शन नीचे कराया जा रहा है -

(17-अगस्त-2018 >> 16-सितंम्बर-2018)

इस समय सूर्य बारहवाँ भाव का सक्रमण करेगा

सूर्य अनुकूल नहीं हैं। अपने कार्य क्षेत्र में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। सहकर्मियों से या अपने समीप में रहनेवालों के प्रति सख्त व्यवहार करना पड़ेगा या कटु वचन कहना पड़ेगा। शारीरिक अस्वस्थता दूर करने का प्रयास करना पड़ेगा। व्यर्थ की लंबी यात्रा करनी होगी। लापरवाह रहने से तबियत पर बुरा असर पड़ने की संभावना है। मानसिक ग्लानि से मुक्त होने का प्रयास अनिवार्य बन पड़ता है। व्ययाधिक्य से बचपाना असंभव नहीं हो कठिन अवश्य है।

(16-सितंम्बर-2018 >> 16-अक्टुबर-2018)

इस समय सूर्य जन्म भाव का संक्रमण करेगा ।

आपने युवावस्था में प्रवेश किया है। मन और शरीर दोनों पूर्णता की ओर तीव्र गति से बढ़ रहे हैं। विचारधारा, अभिलाषा और मनोभाव में परिवर्तन का अनुभव होगा। अनुकूल संजोगों के अनुसार हानि होना संभव है। निवास स्थान में, पढाई में और प्रवृत्ति में परिवर्तन की संभावना है। प्रवृति और यात्रा, दोनों को आकस्मिक समस्याओं का सामना करना होगा। अनेक प्रयत्नों के बावजूद भी उस से बचना कठिन हैं। क्रोध पर नियन्त्रण रखना हर दृष्टि से हितकर होगा।

(16-अक्टुबर-2018 >> 15-नवेम्बर-2018)

इस समय सूर्य दूसरा भाव का सक्रमण करेगा

वर्तमान स्थिति सर्वदा रहने वाली नही हैं। इस कारण व्यर्थ में घबराना अनुचित होगा। आपकी व्यथा धीरे धीरे कम होगी। अप्रत्यक्षमार्ग से सफलता और मान्यता प्राप्त होगी। आमदनी के मार्ग स्पष्ट और सरल बनेंगे। आर्थिक स्थिति में अधिक स्वतंत्र बनने की अभिलाषा जाग्रत होगी। प्रारंभ काल में आर्थिक स्थिति में तनाव रहेगा। मन और दिमाग दोनों को कठिन कार्य में लगाने पड़ेंगे। स्वास्थ्य की ओर सजग रहें तो लाभकारी होगा।

गुरु का गोचर फल।

गुरु हर राशि के बीच एक साल तक रहता है। गुरु के कारण मिलनेवाले फल की प्राप्ति अति प्रधान होती है।

(13-सितंम्बर-2017 >> 11-अक्टुबर-2018)

इस समय गुरु दूसरा भाव का सक्रमण करेगा

आप के सेवापूर्ण कार्यों को मान्यता प्राप्त होगी। भय मुक्त होंगे और धैर्यपूर्ण कार्यों को आगे बढ़ाने में शक्तिमान बनेंगे। राष्ट्रीय कार्यों में और अपने कार्यक्षेत्र के प्रति अभिरुचि जाग्रत होगी। उठाये गये श्रम का फल अनिवार्य प्राप्त होगा। बुज़ुर्गों के संपर्क से सुख में वृद्धि होगी। सुख और आनन्द प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रगति प्रतिष्ठा में वृद्धि और राजकीय अनुकूलता आदि फल प्राप्त होंगे।

(12-अक्टुबर-2018 >> 29-मार्च-2019)

इस समय गुरु तिसरा भाव का सक्रमण करेगा

कार्यक्षेत्र में उठने वाली समस्याओं का धैर्यपूर्वक सामना करने का सामर्थ्य प्राप्त होगा। आर्थिक स्थिति में कठिनाइयाँ उत्पन्न होगी। आमदनी के अनुसार जीवन क्रम में नियंत्रण लाने का प्रयास होगा। मार्ग में आते अवरोधों का सामना करने में सुदृढ़ मनोबल प्राप्त होगा। गुरु अनुकूलता के बदले प्रतिकूल संजोगों का निर्माण करेगा। कार्यक्षेत्र और निवास स्थान बदलने की इच्छा उत्पन्न होगी। समीप की निरर्थक यात्रायें होना संभव होगा। प्रेक्टिकल काम में प्रवीणता प्राप्त होगी।

शनि का गोचर फल।

शनि का गोचर फल साधारण स्थिति में शनि से दुःखद अनुभव ही होता है। शनि के योग के कारण अस्वस्थ स्थिति उत्पन्न होती है। मन उद्वेग से भर उठता है। यह सब होते हुए भी कभी कभी अप्रतिक्षित मार्ग से शनि अनेक लाभ भी प्रदान करता है। हर राशि के मध्य शनि दो वर्ष तक स्थान ग्रहण करता है।

(27-अक्टुबर-2017 >> 24-जानुवरी-2020)

इस समय शनि चौथा भाव का सक्रमण करेगा

शारीरिक अस्वस्थता का अनुभव होगा। मानसिक अशांति भी उत्पन्न होगी। कोई अपशकुन भरा कार्य घटित होने की संभावना बार-बार सताती रहेगी। प्रभु आर्शीवाद से कुछ राहत के साँस ले सकते हैं। इस कारण प्रभु भक्ति में निष्ठा रखना योग्य होगा। यह आपके लिए महत वपूर्ण समय माना जा सकता है। स्वगृह से (निवास स्थान से) दूर की यात्रा की सूचना है। अनेक प्रयास के बावजूद परिवार के अन्य अंगों के माध्यम से और मित्रों से अप्रिय व्यवहार का सामना करना होगा। यह सब कण्टक शनि के प्रभाव से हो रहा है। शय्या सुख में बाधा उत्पन्न होगी।

(25-जानुवरी-2020 >> 29-अप्रेल-2022)

इस समय शनि पंचम भाव का सक्रमण करेगा

नट-खट बच्चों से पीड़ा प्राप्त होगी। अपने अनेक स्वजनों से दूर रहना पड़ेगा। इस व्यथा का अंत कुछ ही समय में आनेवाला है। कुछ अरसे के बाद शनि अनुकूल स्थिति पैदा करनेवाला है। इस कारण शाँति का अनुभव होगा। अध्ययन, मनन और लेखन कार्य में मन नहीं लगा सकेगा। यदि विवाहित हैं तो पत्नी को प्रसव पीड़ा का सामना करना पड़ जा सकता है।

नक्षत्र का स्वामी / उप स्वामी / उप उप स्वामी

गृह	नक्षत्र	नक्षत्र का देव	उप स्वामी	उप उप स्वामी
लग्न	हस्त	चन्द्र	राहु	राहु
चन्द्र	हस्त	चन्द्र	रवि	मंगल
रवि	पूर्वषाढा	शुक्र	चन्द्र	गुरु
बुध	उत्तरषाढा	रवि	शनि	शनि
शुक्र	ज्येष्ठ	बुध	मंगल	बुध
मंगल	रेवत्ति	बुध	गुरु	शनि
गुरु	कृत्तिका	रवि	शनि	शनि
शनि	मूल	केतु	बुध	शुक्र
राहु	शताभिषा	राहु	बुध	गुरु
केतु	पूर्व फालगुनी	शुक्र	शुक्र	मंगल
गुलिक	हस्त	चन्द्र	चन्द्र	राहु

निरायन संक्षिप्त (डिग्रि. मिनिट. सेकेन्ड.)

गृह	राशी	रेखांश	नक्षत्र/पद	गृह	राशी	रेखांश	नक्षत्र/पद
लग्न	कन्या	11:53:33	हस्त / 1	गुरु	वृषभ	3:2:12R	कृत्तिका / 2
चन्द्र	कन्या	22:47:9	हस्त / 4	शनि	धनु	11:51:41	मूल / 4
रवि	धनु	16:36:51	पूर्वषाढा / 1	राहु	कुंम्भ	14:5:41	शताभिषा / 3
बुध	मकर	3:18:43	उत्तरषाढा / 2	केतु	सिंह	14:5:41	पूर्व फालगुनी / 1
शुक्र	वृशचिक	23:48:25	ज्येष्ठ / 3	गुलिक	कन्या	10:10:54	हस्त / 1
मंगल	मीन	26:23:0	रेवत्ति / 3				

उपग्रह

हर गृह की अपेक्षा उपगृह की भी गुणना की जाती है। चन्द्र, शुक्र, मंगल, राहु और केतु के उपगृह की गुणना सूर्य के रेखांश के आधार की जाती है। यह इस प्रकार है।

धुमीदी संग के उपग्रह

गृह	उपग्रह	गुणने की प्रक्रीया या पध्धती
मंगल	धूम	सूर्य का रेखांश अ 133 डिग्रि. 20 मिनिट.
राहु	व्यथिपात	360 - धूम
चन्द्र	परिवेष	180 अ व्यथिपात
शुक्र	इंद्रचाप	360 - परिवेष
केतु	उपकेतु	इंद्रचाप अ 16 डिग्रि. 40 मिनिट.

सूर्य, बुध, गुरु, शनी के उपगृहों का तथा अन्य मंगल के उपग्रहों के गुणन का आधार रात और दिन के आठ समान काल में बाँटे गये ि वभाजन पर आधारीत रहा है।

प्रारंभ विभाग दिन के स्वामित्व के लिये रखा गया है जब की शेष भाग हप्ते के दिल के स्वामित्व के लिये उपयोग में लिया गया है। आठ ि वभाजन के अधिपती नहि रहे हैं।जन्म रात को हुवा हो तो आठ समभाग से सात विभाजीत भागों को गृहों का स्वामी स्थान दिया गया है। यह सप्ताह के पाँचवे दिनसे गिना जाता है।

रेखांश की गिनती केलिये दो अलग-अलग पध्धतियों का आविश्कार किया गया है।प्रथम पध्धति के अनुसार, प्रारंभ समय काल (गृहों के स् वामी) गृहाधीपती के अधिन रहता है। दूसरी पध्धति के अनुसार काल के अंतिम चरण गृहाधीपती के आधिन रहता है।

जब गुलीक के हिसाव से देखों तो शनी के उपग्रह से एक तीसरी पध्धती का भी अनुसंधान किया गया जिससे रेखांश की गिनती की जाती है। यह नीचे दिये गये स्थाई उदयकाल पर निर्भर है।इस प्रकार गुणनफल जो भी प्राप्त हुआ है इसे 'एस्ट्रो विज़न' के पध्धती के अनुसार 'मांदी' कहा जाता है। जन्मपत्रिका मे मुख्य गृह और राशी चक्र के साथ दिया गया है।

दिन	दिन के समय जन्म	रात के वक्त जन्म
रविवार	26	गटि 10 गटि
सोमवार	22	6
मंगलवार	18	2
वुधवार	14	26
गुरुवार	10	22
शुक्रवार	6	18
शनिवार	2	14

गुलिकादी का समूह।

स्वीकार्य पध्धती : लग्न के प्रारंभकाल

गृह	उपग्रह	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय
रवि	काल	0:24:34	2:6:56
बुध	अर्धप्रहर	17:35:4	19:17:26
मंगल	मृत्यु	3:49:19	5:31:41
गुरु	यमकंठक	19:17:26	20:59:49
शनि	गुलिक	22:42:11	0:24:34

रेखांश उपगृह

उपग्रह	रेखांश डि : मि :से	राशी	राशी के रेखांश प्रकार डि : मि :से	नक्षत्र	पद
काल	166:12:26	कन्या	16:12:26	हस्त	2
अर्धप्रहर	77:18:5	मिथुन	17:18:5	आर्द्र	4
मृत्यु	210:31:48	वृशचिक	0:31:48	विशखा	4
यमकंठक	99:22:33	कर्क	9:22:33	पुष्य	2
गुलिक	143:36:29	सिंह	23:36:29	पूर्व फालगुनी	4
परिवेष	150:3:9	कन्या	0:3:9	उत्तर फालगुनी	2
इंद्रचाप	209:56:51	तुला	29:56:51	विशखा	3
व्यथिपात	330:3:9	मीन	0:3:9	पूर्व भद्रपाढा	4
उपकेतु	226:36:51	वृशचिक	16:36:51	अनुराधा	4
धूम	29:56:51	मेष	29:56:51	कृत्तिका	1

नक्षत्राधीपती / नक्षत्राधी सहपती / नक्षत्राधी अनुसहपती तथां उपग्रहों की नामावली।

उपग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र का देव	उप स्वामी	उप उप स्वामी
काल	हस्त	चन्द्र	शनि	बुध
अर्धप्रहर	आर्द्र	राहु	शुक्र	बुध
मृत्यु	विशखा	गुरु	चन्द्र	रवि
यमकंठक	पुष्य	शनि	शुक्र	गुरु
गुलिक	पूर्व फालगुनी	शुक्र	शनि	राहु
परिवेष	उत्तर फालगुनी	रवि	राहु	शनि
इंद्रचाप	विशखा	गुरु	चन्द्र	शनि
व्यथिपात	पूर्व भद्रपाढा	गुरु	चन्द्र	शनि
उपकेतु	अनुराधा	शनि	गुरु	राहु
धूम	कृत्तिका	रवि	राहु	शनि

षोढसवर्गा टेबुल

ल	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	रा	के	मा
राशी										
6:	6:	9	10:	8:	12:	2:	9	11	5	6:
औरा										
4:	5	4:	4:	5	5	4:	5	5	5	4:
द्रिख्खन										
10:	2:	1	10:	4:	8:	2:	1	3	9	10:
चतूर्थांश										
9	3	3	10:	5	9	2:	12:	2:	8:	9
सप्तांश										
2:	5	12:	4:	7	12:	8:	11	2:	8:	2:
नवांश										
1	4:	5	10:	11	11	10:	4:	11	5	1
दशांश										
5	9	2:	7	11	4:	11	12:	3	9	5
व्दादशांश										
10:	3	3	11	5	10:	3	1	4:	10:	10:
सोडांश										
3	9	5	2:	5	11	6:	3	12:	12:	2:
विंशाम्स										
12:	8:	4:	3	12:	10:	11	12:	6:	6:	11
चतुर्विंशाम्स										
1	10:	6:	6:	11	1	6:	2:	4:	4:	12:
भम्श										
2:	12:	3	6:	7	9	6:	11	7	1	1
त्रिमशांश										
6:	10:	9	2:	10:	8:	2:	9	9	9	6:
खवेदांश										
10:	1	11	11	2:	6:	11	4:	7	7	8:
2:	7	9	5	4:	12:	9	2:	2:	2:	12:

शष्टियांश										
5	3	6:	4:	7	4:	8:	8:	3	9	2:
ओजराशी गणन										
6	9	10	5	10	6	5	8	9	9	5

1-मेष 2-वृषभ 3-मिथुन 4-कर्क 5-सिंह 6-कन्या 7-तुला 8-वृशचिक 9-धनु 10-मकर 11-कुंम्भ 12-मीन

वर्गोत्तम बुध राहु केतु वर्गोंतम में है ।

अष्टकवर्ग

चं	र	बु	शु	मं	गु	श	सभी मिलाकार
मेष							
4	2	5	3	4	4	3	25
वृषभ							
6	2	2	4	2	5	2	23
मिथुन							
3	6	6	2	5	5	3	30
कर्क							
6	4	4	6	3	5	4	32
सिंह							
4	3	2	4	1	3	2	19
कन्या							
3	5	5	6	5	5	5	34
तुला							
3	6	7	4	5	5	5	35
वृशचिक							
5	4	4	6	3	3	3	28
धनु							
2	5	7	4	2	5	4	29
मकर							
3	4	4	5	1	5	2	24
कुंम्भ							
6	2	3	4	4	5	4	28
मीन							
4	5	5	4	4	6	2	30
49	48	54	52	39	56	39	337

षाढबाला संक्षिप्त टेबुल

चं	र	बु	शु	मं	गु	श
संपूर्ण षड्बल						
532.81	313.02	366.73	344.92	522.67	345.31	429.19
संपूर्ण शडबल (रूप)						
8.88	5.22	6.11	5.75	8.71	5.76	7.15
मौलीक ज़रूरतें						
6.00	5.00	7.00	5.50	5.00	6.50	5.00
षडबल अनुपात						
1.48	1.04	0.87	1.05	1.74	0.89	1.43
संबन्धी स्थानक						
2	5	7	4	1	6	3

इष्टफल, कष्टफल की नामावली

चं	र	बु	शु	मं	गु	श
इष्टफल						
19.35	8.74	26.93	16.25	29.69	42.81	8.52
कष्टफल						
38.65	46.24	32.72	43.48	27.28	16.65	31.75

भावबल की यादी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधीपती का बल											
366.73	344.92	522.67	345.31	429.19	429.19	345.31	522.67	344.92	366.73	532.81	313.02
भावद्रिगबल											
60.00	50.00	20.00	30.00	10.00	10.00	30.00	40.00	50.00	30.00	10.00	40.00
भावद्रिष्टीबल											
51.24	14.91	44.86	43.52	64.80	7.66	20.80	40.68	36.03	4.54	53.86	67.26
संपूर्ण भावबल											
477.97	409.83	587.53	418.83	503.99	446.85	396.11	603.35	430.95	401.27	596.67	420.28
भावबल के रुप											
7.97	6.83	9.79	6.98	8.40	7.45	6.60	10.06	7.18	6.69	9.94	7.00
संबन्धी स्थानक											
5	10	3	9	4	6	12	1	7	11	2	8

With best wishes : Astro-Vision Futuretech Pvt.Ltd.

First Floor, White Tower, Kuthappadi Road, Thammanam P.O - 682032

[ClickAstro In-Depth Horoscope - 14.0.0.2]

Note:
This report is based on the data provided by you and the best possible research support we have received so far. We do not assume any responsibility for the accuracy or the effect of any decision that may be taken on the basis of this report.